पहर के वह बजते उठा बेनज़ीर । हुई ग़म की तसवीर बद्रेमुनीर
न बोली न की बात ने कुछ कहा । न देखा उधर आँख अपनी उठा
कहा मुझ से प्यारी न बेज़ार हो । फिर आऊंगा बोली कि मुख़्तार हो
ख़फ़ा उसके होने से वह नौ जवाँ । गया तो चले मुँह पै आँसू रवाँ
हुये दिल जो दोनों के आपस में बंद । लगे हिज्र से दिल पै आने गज़ंद
बँधा फिर तो मामूल उस का मुदाम । कि हर रोज़ आना उधर वक़्त शाम
पहर रात तक हँसना और बोलना । दरे हुस्न और इश्क़ को खोलना
कभी हिज्र से उनको होना मलूल । कभी वस्ल में बैठना फूल फूल।

दास्तान ख़बर पाना माहरुख़ का ज़बानी देव के इश्क़ बेनज़ीर और बद्रेमुनीर से और क़ैद करना बेनज़ीर को.

पिला जल्द साक़ी मुझे भर के जाम। । कि है चर्ख़ भी दरपये इन्तिक़ाम।
यह दो दिल को इकजा बिठाता नहीं । किसी का इसे वस्ल भाता नहीं।
यह है दुश्मने वस्लो दिल सोज़े हिज्र । करे है शबे वस्ल तो रोज़े हिज्र।
जुदाई उन्हीं की ख़ुश आई उसे । फिर इतनी भी सुहब्बत न भाई उसे
किसी देव ने दी परी को ख़बर । कि माशूक़ आशिक़ हुवा और पर
यह सुन कर वह शोला भभूका हुई । लगी कहने हैं यह बला क्या हुई
क़सम मुझ को हज़रत सुलेमान की । हुई दुश्मन अब उस के मैं जान की।
कहा देव से दे मुझे तो बता । कहा वह किसी बाग़ में था खड़ा
कोई नाज़नीं सी थी यक उसके साथ। । खड़ी थी दिये हाथ में उस के हाथ।
क़ज़ारा उड़ा मैं जो हो कर उधर। । वह दोनों मुझे वाँ पड़े थे नज़र।
यह उड़ती सी उस को ख़बर सुन परी । कहा देखने पाऊँ उस को ज़री।

तो खा जाऊँ कच्चा उसे मौत हो	लगी है मेरी अब तो वह सौत हो
वह आवें तो आगे मेरे नाबकार	गरेबाँ को उस के करूँ तार तार
यही क़ौलो इक़रार था मेरे साथ	भला उसका दामन है और मेरा हाथ।
हमारे बुज़ुरगों ने सच है कहा।	कि है आदमीज़ाद क़ौल बेवफ़ा।
ग़ज़ब नाक बैठी थी यह तो उधर।	कि इतने में आया वह रश्के क़मर
उसे देख ग़ुस्से में वह डर गया	कहे तू कि जीतेही जी मर गया
चलासी वह देख उस के पीछे पड़ी	कहा सुन तो ऐ मूज़ियो अूदई।
तुझे सैर को मैं ने घोड़ा दिया	कि उस मालज़ादी को जोड़ा दिया
अलग हम से यों रहना और छूटना।	यह ऊपरही ऊपर मज़े लूटना।

तसवीर देव के गिरफ़्तार करने की बेनज़ीर को परी के कहने से ॥

मुचल्का दिया था न तू ने यही । भला इसका बदला न लूं तो सही ।
फिरा जैसा रातों को दिलशाद तू । करेगा दिनों को बहुत याद तू ।
मज़ा चाह का देख अपने ज़रा । भकाती हूं कैसे कुवें रू भला ।
तुझे जी से मारूं तो क्या से ग़रीब । वले चाहते थे यह तेरे नसीब ।
कि चाहे अलम में फ़साऊं तुझे । हँसा है तू जैसा रुलाऊं तुझे ।
यह कह और बुला यक परीज़ाद को । कहा सुनिये इस की न फ़रयाद को ।
इसे खींचता यां से लेजा शिताब । वह सहरा जो है रंजो मेहनत का बाब ।
कुवां उस में जो है मुसीबत भरा । कई मन का पत्थर है उस पर धरा ।
इसे जाके उस चाह में बन्द कर । वही संग फिर उसके मुंह पर तो धर ।
सरे शाम खाना खिलाना उसे । और एक जाम पानी पिलाना उसे ।
न दीजो सिवा इसके जो कुछ कहे । यही इस का मामूल दायम रहे ।
यह सुन देव उस गुल के नज़दीक आ । पकड़ हाथ उसका फ़लक पर उड़ा ।
गिरी उस पै जो आसमानी बला । दिल उस नाज़नीं का हवा हो चला ।
हुवा यों जो उस चर्ख़ बाज़ू का औज । चली आहो नाले की साथ उसके फ़ौज ।
कहा दिल यह रुतबा जो कुछ आज है । यही इश्क़ की जान में राज है ।
किया बन्द फिर जा के उस चाह में । कुवां वह जो था क़ाफ़ की राह में ।
वह यूसुफ़ कुवें में हुवा जब कि बंद । हुआ उससे पस्ती का रुतबा बलन्द ।
खुले उस कुवें के यकायक नसीब । कि आया वह उस में मह दिल फ़रेब ।
मुनव्वर वह घर उसका सारा हुआ । कुवें की वह पुतली का तारा हुआ ।
वह अन्धा पड़ा था सो रोशन हुवा । ज़बां उस में वह सांप का मन हुवा ।
वले पाउं जब उस का तह पर गया । कुवां उस के अन्दोह से भर गया ।
ज़मीं में समाया तहय्युर से आब । गये खुश्क आंसू कुवें के शिताब ।
हुआ यां से ऊपर गई कांप कांप । कुवें ने लिया संग से मुंह को ढांप

दिलउस नाज़नीका धड़कने लगा
जिगर टुकड़े होकर फड़कने लगा

अँधेरे उजाले न निकला था जो
हुआ क़ैद आ उस अँधेरे में वो

निकलने की सूझी न वाँ उसको राह
हुआ उसकी आँखों में आलम सियाह

अँधेरे ने उस का किया दम ख़फ़ा
किजों ले सियाही किसी को दबा

फ़िग़ाँ की बहुत और पुकारा बहुत
सिर अपने को हर तर्फ़ मारा बहुत

पुकारा वह जिस तिसको फ़रयादकर
न पहुँचा कोई कार वाँ भी उधर

न मूनिस न ग़मख़्वार उसका कोई
न था जुज़ ख़ुदा यार उस का कोई

वही चाह तारीक उस का रफ़ीक़
वही संग सिर पर बजाये शफ़ीक़

हवा भी न वाँ जिससे दम साज़ हो
कुवें की सुनें कौन आवाज़ को

कुवाँ ही सुदाम उस का हम दम रहे
जो उस से सुने वह ही उस से कहे

कुवाँ उस को पूँछे वह पूँछे उसे
अँधेरे सिवा कुछ न सूझे उसे।

सियाही में जैसे हो काफ़िर का दिल
सऊबत में उससे जहन्नुम ख़िजल।

न शब की सियाही वहाँ दिन का नूर
सदा ज़ुल्मते ग़म का उस जा ज़हूर

ग़मो दर्दो उल्फ़त को खा खा जिये
लहू पानी अपना कुवें में पिये

इस अँधेर को क्या लिखूँ अब मैं आह
क़लम के निकलते हैं आँसू सियाह

न था वह कुवाँ था सितूने अलम
निशाने शबे आफ़ते दर्दो ग़म।

करूँ सुख़्तिसिरयाँ से इस ग़म की बात
लगा रहने उस में वह आबेहयात

नहीं सुखलसी सूझती अब उसे
निकाले ख़ुदा देखिये कब उसे

फँसा इस तरह से जो वह बेनज़ीर
पड़ी बेक़रारी में बद्रे मुनीर।

वह सम दो दिलों में जो होती है चाह
तो होती है दिल को तईं दिल से राह

क़लक़ वाँ जो गुज़रा तो याँ ग़म हुवा
रुका जी वहाँ या ख़फ़ा दम हुवा

कोई दिन न आया जो वह रश्केमह
नज़र में हुवा उस के आलम सियह

लगी कहने नजमुन्निसा से बुवा
ख़ुदा जाने वह शख़्स पर क्या हुवा

कहा उस ने बी तुम को सौदा है कुछ
वह माशूक़ है उस को परवा है कुछ।

ख़ुदा जाने किस शग़्ल में लग गया
मेरी चिढ़ है इतना भी होना फ़िदा

वह रहि रहि के तुम को दिलाता है चाह
अबस आप को मत करो तुम तबाह

रुके जो कोई उस से रुक जाइये
झुके आप से वह तो झुक जाइये

तफ़ाव्वल भला कुछ निकाला करो
ज़रा आप को तुम सँभाला करो

यह सुन चुप रही दिल में खा पेचोताब
दिया कुछ न इस बात का फिर जवाब

गये इस पै जब दिन कई और भी
पकड़ने लगे फिर तो कुछ तौर भी

दिवानी सी हर तर्फ़ फिरने लगी
दरख़्तों में जा जा के गिरने लगी

ठहरने लगा जान में इज़्तिराब
लगी देखने वह शात आलूदा ख़्वाब

तपे हिज्र वा दिल में करने लगी
दुरे अश्क़ से चश्म भरने लगी।

ख़फ़ा ज़िन्दगानी से होने लगी
बहाने से जा जा के सोने लगी।

तपे ग़म की शिद्दत से वह काँप काँप
अकेलीं लगी रोने मुँह ढाँप ढाँप

न अगला सा हँसना न वह बोलना
न खाना न पीना न लब खोलना।

जहाँ बैठना फिर न उठना उसे।
मुहब्बत में दिन रात घुटना उसे

कहा गर किसी ने कि बीबी चलो
तो उठना उसे कहि के हाँ जी चलो

जो पूँछा किसी ने कि क्या हाल है
तो कहना यही है जो अहवाल है

किसी ने जो कुछ बात की बात की
पै दिन की जो पूँछी कही रात की

कहा गर किसी ने कि कुछ खाइये
कहा ख़ैर बेहतर है मँगवाइये

किसी ने कहा सैर कीजे ज़रा
कहा सैर से दिल है मेरा भरा।

जो पानी पिलाना तो पीना उसे
ग़रज़ ग़ैर के हाथ जीना उसे

न खाने की सुध और न पीने का होश
भरा दिल में उसके मुहब्बत का जोश

चमन पर न मायल न गुल पर नज़र
वही सामने सूरत आठों पहर

नहुफ़ता उसी से सवालो जवाब
सदा रूबरू उस की ग़म की किताब

जो आजाय कुछ ज़िक्र शेरो सख़ुन । तो पढ़ना यह दो तीन शेरें हसन

ग़ज़ल

यह क्या इश्क़ आफ़त उठाने लगा । मेरे दिल को मुझ से छुड़ाने लगा
मिला मेरे दिलबर को मुझ से ख़ुदा । नहीं तो मेरा दिल ठिकाने लगा
गुनह चश्म ख़ूँख़ार का कुछ नहीं । मेरा दिल ही मुझ को डुबाने लगा
फ़लक ने तो इतना हँसाया न था । कि जिस के एवज़ यों रोलाने लगा
नहीं मुझ को दुश्मन से शिकवा हसन । मेरा दोस्त मुझ को सताने लगा
ग़ज़ल या रुबाई वो या कोई फ़र्द । इसी ढब से पढ़ना कि हो जिस में दर्द
सो यह भी जो मज़कूर निकले कहीं । नहीं तो कुछ इस की भी ख़्वाहिश नहीं
सबब यह कि दिल से तअ़ल्लुक़ है सब । न हो दिल तो फिर बात भी है ग़ज़ब ।
गया हो जब अपना ही जिउड़ा निकल । कहाँ की रुबाई कहाँ की ग़ज़ल ।

दास्तान बद्रेमुनीर के ग़मो अंदोह की और ऐशबाई के बुलाने में ॥

गुलाबी में ग़ुंचे के मुझ को शिताब । पिला साक़िया केतकी की शराब ।
पियाले में नरगिस के दे मेरी जाँ । कि देखूं मैं कैफ़िय्यते बोस्तां ।
हिकायत करूं एक दिन की रक़म । कि दुनियाँ में तो अब है शादी वो ग़म
उठी सोते एक दिन वह रश्के परी । ज़रा जाके देखो चमन को ज़री
मगर ग़ुंचा सा कुछ खिले मेरा दिल । कि ग़म ने किया है निपट मुज़महिल
ज़िनस गुल से आती थी बूयार की । हवा फिर हुई उस को गुलज़ार की
फिर इक दिन हुआ यह कि मुँह हाथ धो । चली उठ के दालान से सैर को
ज़मुर्रद का मोढ़ा चमन पर बिछा । वह बैठी एक अजब आन से दिलरुबा

कि ज़ानू पै एक पाउँ को धर लिया । औरइक पाउँ मोढ़े से लटका दिया
न पूँछ उसके पाये निगारी का हाल । ज़बाने सनावस्फ़ में जिस के लाल ।
कफ़क़ और फिंदक से लाले को दाग़ । न हो ऐसी कैफ़ीय्यते पाइ बाग़ ।
तिलाई कड़े और कफ़क़ का वह रंग । सुनहरी शफ़क़ जिस को ही देख दंग
जवाहिर के छल्ले भरे पोर पोर । ज़री कौट की जैसी मख़मल पै तोर
ज़िबस सोती उट्ठी थी वह नाज़नीं । पड़ी थी अजब ढब से चीने जबीं ।
ख़ुमारी वह अँखियाँ वह अँगड़ाइयाँ । वह जोबन के आलम की सरसाइयाँ
जवानी का मौसम शुरूये बहार । वह सीने से उस के कुचों का उभार
नशे में वह आ हुस्न के ऐंठना । वह छब तरक़ी अपनी को देख ऐंठना
ख़वास एक हुक़्क़ा लिये थी खड़ी । कि लाले की पत्ती थी उस में पड़ी ।
वह शीशे का हुक़्क़ा सुरम्मा का काम । सुग़रिक़ ज़री का वह नैचा तमाम
चले एक उस पर पड़ा था जो पेच । वह सब उस के आगे था गोया कि हेच
लबे नाज़ुक ऊपर वह मुँहनाल धर । निकाले थी परदे से दूदे ज़िगर ।
इधर और उधर हेर तरफ़ थी निगाह । किसी की कोई जैसी तकता है राह ।
ख़वासें खड़ीं उस के सब गिरदो पेश । जो थीं अपने उहदे पे हाज़िर हमेश ।
कोई मोरछल्ले कोई पीकदान । कोई लें चंगेर और कोई हार पान
रसीली छबीली बनी तंगो चुस्त । लिबास और ज़ेवर से हर एक दुरुस्त
खड़ी नीची आँखें किये बा अदब । इसी शर्म से पर क़यामत ग़ज़ब
वह आँखें कि करती थीं जीधर निगाह । उधर ग़श में आते थे सब कूलो काह
कई हमदम उस की जो थीं माहरू । बिछाये हुये कुरसियाँ रूबरू ।
बराबर बराबर इधर और उधर । वह गिर्द उस के बैठी थीं बा एक दिगर
समाँ उस घड़ी का कहूं क्या मैं आह । सितारों में था जिलवागर एक माह
अजब हुस्न था बाग़ में जिलवागर । कि हर गुल की थी उस के मुँह पर नज़र

चमनं उस घड़ी बस्सरे जोश था
गुलो गुंचा जो था सो बेहोश था

ज़िबस अ्रतर में थी वह बूटी हुई
दुचाला हरएक गुल की खूबी हुई

मुअ्रत्तर हुआ और गुल का दिमाग़
किमहका तमाम उसकी खुशबू से बाग़

पड़ा अ्रक्स उस का जो तरफ़े चमन
हुआ लाला गुल और गुल नस्तरन।

दरख़्तों पै उस के पड़ी जो झलक
ज़मुर्रद की दी और उस ने चमक।

हुई उस के बैठे से गुलशन की ज़ेब
गया उड़ सबा का भी सबरो शिकेब

चमन ने जो उस गुल की देखी बहार
हुआ देख अपने गुलों का फ़िगार

गुलो गुंचवो लाला आपुस में मिल
लगे कहने इस बाग़ का है यह दिल

गई जी से बुलबुल के गुलशन की चाह
हुई सर्व की तरह क़ुमरी को आह

हुवे वाँ के आईना दीवारो दर
वह महसबके दिल में हुई जिलवागर

कि इतने में कुछ जी में जी आ गया
अदा से लगी कहने वह दिलरुबा।

अरे है कोई याँ ज़रा जाइयो।
मेरी ऐश बाई को ले आइयो

अ्रजब वक़्त है और अ्रजब है समाँ
करे दो घड़ी आके मुजरा यहाँ

ख़फ़ा हूं मेरा जी भी मशग़ूल हो
कोई दम तो दाग़ जिगर फूल हो

किसी तरह से दिल तो लगता नहीं
जले हैं जिगर दिल सुलगता नहीं

यह सुनते ही दौड़ी गई इक निगार
लिया ऐश बाई को उस ने पुकार।

वह आने लगी काफ़िर इन आन से
कि जाने लगा जी मुसलमान से

अ्रजब चाल से वह चली नाज़नीं
कि मस्ती में पावों कहीं का कहीं

वह ख़िलक़त की गर्मी वह डोमनपना।
नशे में भभूका सा चेहरा बना

लटें मुँह पै छूटी हुई सर बसर
कि बदली हो जों मह के ईधर उधर

वह बिन पोंछे होंठों की मिस्सी ग़ज़ब
कि मुँह पर थी गोया क़यामत की शब

फ़क़त कान में एक बाला पड़ा
कहे तू किया मह के हाला पड़ा

वह पेशवाज़ अ्रबर्इ नरगिस के हार
वह क़मरख़ाब के बन्द रूसी इज़ार

बँधा सिर पै जूड़ा पड़ी ज़र्द शाल। कमर की लचक और मटक की वह चाल
वह शबनम की अँगियाँ बनी तंगो चुस्त किनारों पै मीना बनत का दुरुस्त।
वह उड़ी हुई चीन पिशवाज़ की वह मसकी हुई चोली अन्दाज़ की।
वह मेंहदी का आलम वह तोड़े छड़े वह पाओं में सोने के दो दो कड़े
चली वाँ से दामन उठाती हुई कड़े सैं कड़े को बजाती हुई।
अजब एक आलम था बेसाख़्ता कि आलम था यक उसपै दिल बाख़्ता
कई काफ़िरें और भी दिल निवाज़। लिये साथ२ उसके सब अपना साज़।
चली एक अग़माज़ और नाज़ से खड़ी वाँ हुई एक अन्दाज़ से
रविश पर जो था फ़र्श उस के हुज़ूर अदब से वहाँ बैठ याँ मिल के दूर
हुवा हुक्म गौरी का जो बरमला लिये साज़ अपने सभों ने उठा।
दिया अस समा पर जो तबला को खींच हर यक थाप में दिल लिया सब का ईंच
लगी गाने टप्पा वह इस आन से निकलने लगी जान हर तान से
अजब ताल पड़ती थी अन्दाज़ं से कि बेकल थी हर तान आवाज़ से
वह थी टिटकारी या लड़ी नूर की झुसलसल थी यक फुलझड़ी नूर की
गुलो गुंचा की तरह महबूब थी खुली और मुँदी दिल की मरग़ूब थी
ग़रज़ क्या कहूं उस का मैं माजरा अजब तरह की बँध गई थी हवा।
वह गाने का आलम वह हुस्ने बयाँ वह गुलशन की ख़ूबी वह दिन का समाँ
घड़ी चार दिन बाक़ी उस वक़्त था सुहाना हर एक तर्फ़ साया ढला।
दरख़्तों का कुछ छाउं और कुछ वह धूप वह धानों की सब्ज़ी वह सरसों का रूप
लपेटे हुये पोस्तों पर तमाम रुपहले सुनहले वरक़ सुबहो शाम।
वह लाले का आलम हज़ारे का रंग वह आँखों के डोरे नशे का तरंग
गुलाबी से हो जाना दीवारो दर दरख़्तों से आना शफ़क़ का नज़र
वह चादर का छुटना वह पानी का ज़ोर, हर एक जानवर का दरख़्तों पै शोर

वह सर्वे सही और आबे रवाँ । वह मस्ती से पानी का बहना वहाँ
वह उड़ती सी नौबत की धीमी सदा । कहीं दूर से गोश पड़ती थी आ
वह रक़्से बुताँ औरं सुथरी अलाप । वह गौरी की तानें वह तबलों की थाप
वह दिल पीसना हाथ पर धर के हाथ । उछलना वह दामन का ठोकर के साथ
न इनसान ही का हो दिल इस में बन्द । हुवे महव सुन के चरिन्दो परिन्द
ग़रज़ जो खड़े थे खड़े रहि गये । अड़े जिस जगह सो अड़े रहि गये
जो पीछे थे आगे न वह चल सके । जो बैठे सो बैठे न फिर हिल सके
लगी देखने आँख नरगिस उठा । गुलों ने दिये कान ऊधर लगा।
लगे हिलने आवज्द में सब दरख़्त । खड़े रह गये सर्व हो कर करख़्त
दरख़्तों से गिरने लगे जानवर । बने मिस्ल आइना दीवारो दर।
हुई क़ुँमरियाँ शौक़ से नाराज़न । भरा अश्क़ से बुलबुलों ने चमन।
हुये नहर से संग पाये पिघल । पड़े सारे फ़व्वारे उस के उछल
अजब राग को भी दिया है असर । कि हो जाय पत्थर को पानी जिगर
बँधा इस तरह का जो उस जा समाँ । हुवा सब के दिल की अजब हाल वाँ
वलेकिन जो कुछ दिल गयों पर गया । कि बिन आये हर इक वहाँ मर गया।
लगा था ज़िबसइ इश्क़ का उस को तीर । लगी खींचने आह बद्रे मुनीर
बँधा उस को आशिक़ का अपने ख़याल । लगी रोने आँखों पै धर कर रुमाल।
कहीं का कहीं ले उड़ा उस को राग । हवा से हुई और दूनी वह आग
लगी कहने हैहै यह देखूं मैं सैर । न हो पास मेरे वह या रब बख़ैर
वह जानै कि हो जिसके कुछ दिल का लाग । कि माशूक़ बिन सब है गुलज़ार आग
भला क्यों कि जी उस का ख़ुश हाल हो । कि हिज्रा का ग़म जिस को जुंजाल हो
जिगर में अगर आह की शूल हो । लगे ख़ार कैसा ही गो फूल हो।
दरख़्तों के आलम से क्या हो निहाल । जिसे याद शमशाद की हो कमाल

करे गुलशनो गुल पै क्या वह नज़र
जिसे अपने गुल की न होवे ख़बर

यह कह कर उठी वाँ से वह दिलरुबा
छपरखट पै जा कर गिरी मुँह छिपा।

ख़ुशी का जो आलम था मातम हुवा
वरक़ का वरक़ ही वह बरहम हुवा

सब उठते ही बस उस के जाती रहीं
तवायफ़ कहीं और ख़वासें कहीं

मेरी अक़्ल इस जा पै हैरान है
किया रब यह कैसा गुलिस्तान है

हर एक वरक़ है इस का आलम जुदा
जो चाहो कि फिर हो तो इमकान क्या

कभी है ख़िज़ा और कभी है बहार
नहीं यक वतीरे पै लैलो नहार।

दास्तान बेनज़ीर के ग़मे हिज्र से बद्रेमुनीर की बेक़रारी में.

पिला साक़ी यक जाम मुझ को शिताब
कि पर्दे में शब के गये आफ़ताब।

शबे हिज्र की फिर अलामत हुई
ग़रज़ आशिक़ों पर क़यामत हुई

गिरी जब छपरखट पै वह रश्क हूर
सभों को कहा तुम रहो दूर दूर।

अकेली वह रोने लगी ज़ार ज़ार
उसी अपने आलम में बेइख़्तियार

गिरे चश्म से उसके इतने गुहर
कि धोया उसी आब से मुँह सहर

सबूही तो दे साक़िये लाल फ़ाम
कि रो धो के मैं रात काटी तमाम

हुवा आफ़ताबे अलम जो तुलूअ
उदासी का होने लगा दिन शुरूअ

ज़रा आइना लेके देखा जो रंग
तो जों आईना रहि गई वह भी दंग

बदन को जो देखा तो ज़ारो नज़ार
किसी को कोई जैसे देवे फ़िसार।

फ़लक की तरफ़ देख और झुक कर
लगी दिल को बहलाने ईधर उधर।

ज़बाँ पर तो बातें वले दिल उदास
परागन्दा हैरत से होशो हवास

न मुँह की ख़बर और न तन की ख़बर
न सिर की ख़बर ने बदन की ख़बर

अगर सिर खुला है तो कुछ ग़म नहीं
जो कुरती है मैली तो महरम नहीं।

जो मिस्सी है दो दिन की तो है वही
जो कंघी नहीं है तो यों ही सही

जो सीना खुला है तो दिल चाक है — ग़म आलूदा सुब्हे तरब नाक है
न मंज़ूर सुरमा न काजल से काम — नज़र में वही तीरा बख़्ती की शाम
वलेकिन यह ख़ूबों का है ख़ासा सुभाउ — कि बिगड़े से दूना हो उन का बनाउ
नहीं हुस्न की इस तरह भी कमी। — जो बिगड़ी है बैठी तो गोया बनी।
ग़रज़ बे अदाई है या की अदा — भलों को सभी कुछ लगै है भला
जो माथे पै चीने ज़बीं ग़म से है — तो वह भी है एक मौज दरयाय मे
वह आँखें जो रोई हैं बस फूट फूट — तो गोया की मोती भरे कूट कूट
तपे ग़म से यों तमतमाये हैं गाल — कि जो रंग लाला हो वक़्ते ज़वाल
ग़रेबान सीने पै है जो खुला। — तो गोया वह है सुब्ह इशरत फ़िज़ा
नक़ाहत से चेहरा अगर ज़र्द है — चोया आह होठों पै कुछ सर्द है
अदा से नहीं वह भी आलम ज़ुदा। — कि है चाँदनी और ठंढी हवा।

दास्तान बेक़रारी बद्रेमुनीर की बेनज़ीर के फ़िराक़ में और नजमुन्निसा के तसल्ली देने में।

पिला साक़िया साग़रे बेनज़ीर — फँसी दाम हिजराँ में बद्रेमुनीर
वह हुस्नो जवानी और उस पर यह ग़म — सितम है सितम है सितम है सितम
जहाँ बैठना आह करना उसे — बहाना नज़ाक़त पै धरना उसे
कभी ख़ून आँखों से रो डालना — किसी को कभी देख धो डालना
ख़वासों को बाला बताना उसे — अकेली दरख़्तों में जाना उसे।
वले उन दरख़्तों में जिस में वह माह — सरे शाम छिप २ के करते निगाह
सो वह भी पहर दिन से आठों मुदाम — उसी छाउँ में बैठी करती थी शाम
गया इस तरह जब महीना गुज़र — कि वह माह मुतलक़ न आया नज़र
और उस का उधर रंग घटने लगा — जिगर ख़ूँ हो मिज़गाँ पै बटने लगा

लगी रहने तप जान बेताब में
लगे फ़र्क़ आने ख़ुरो ख़्वाब में
मुहब्बत का सौदा सा होने लगा
जनूं तुख़्म वहशत का बोने लगा
सरकने लगा पास नामूसो नंग
लगी अक़्ल और इश्क़ में होने जंग
ख़मोशी उठाने लगी दिल में शोर
जताने लगी नातवानी भी ज़ोर।
यह अहवाल देख उस का दुख़्ते वज़ीर
लगी जल के कहने कि बद्रेमुनीर
तू वह है कि सब के तईं दे वक़ूफ़
किधर दिल गया तेरा ऐ बेवक़ूफ़।
मुसाफ़िर से कोई भी करता है प्रीत
मसल है कि जोगी हुये किसके मीत
अरी चार दिन के यह हैं आशना
मिला दिल को आख़िर करें हैं जुदा
गहे आसमाँ गह ज़मीं के हैं यह
जहाँ बैठ जा बस वहीं के हैं यह
तू भूली है किस बात पर ऐ बुवा
ख़बर ले दिवानी तुझे क्या हुवा
सुनो जानी अपने पै जो कोई मरे
जो दिल अपना पहले भी सदक़े करे
अगर आप पर कोई शैदा न हो
तो फिर चाहिये उस की परवा न हो
वह ख़ुश होगा अपनी परी को लिये
अबस उस पै बैठी हो तुम जी दिये।
तुम्हारी उसे चाह होती अगर
तो अब तक वह तुमको न आता नज़र
लगी कहने तब उसको बद्रेमुनीर
कि सुनती है ऐ मेरी दुख़्ते वज़ीर
किसी की बदी तू न कर ऐब है
कि उसका ख़ुदा आलिमुल ग़ैब है।
वह अपने दिलों से तो है नेक ज़ात
हुई उस पै क्या जानिये वारदात
हुआ क़ैद या आने पाया न वह
गये इतने दिन अब तक आया न वह
मुझे रात दिन इसका रहता है डर
परी ने सुनी हो न याँ की ख़बर।
न बाँधा हो उस को किसी क़ैद में
किया हो न उस के तईं क़ैद में
परी ने कहीं तैश ख़ालाफ़ में
दिया हो न फ़ेंक उस को कोहक़ाफ़ में
परिस्तान से भी निकाला न हो
किसी देव के मुँह में डाला न हो।
न मिलने के दुख उसके सब मैं सहे।
भला अपने जी से वह जीता रहे

यह कहहाल दिल अपना रोने लगी
गुहर आँसुओं के परोने लगी।

कई सुड़ करी मार आख़िर को लेट
छपरखट के कोने पै सिर मुँह लपेट

ख़्वाब देखना बद्रेमुनीर का बेनज़ीर को कुवें में और जोगिन बनकर निकलना नजमुन्निसा को उसके तलाश में।

पिला साक़िया जामेजम से वह मुल
कि ग़ायब का अहवाल ज़ाहिर हो कुल

किसी का तो आ का मफ़र ख़ुंदा हाल
कि आख़िर यह दुनियाँ है ख़्वाबो ख़याल

ज़रा आँख झपकी जो उस हाल में
तो देखा फँसा उस को जंजाल में

क़ज़ा ने दिखाया अजब उसको ख़्वाब
कि दुश्मन न देखे यह हाले ख़राब।

जो देखे तो सहरा है यक लक़ो दक़
कि रुस्तम जिसे देख हो जाय फ़क़।

न इनसान है वाँ न हैवान है।
फ़क़त यक कफ़े दस्त मैदान है

मगर बीच में उस के है यक कुवाँ
कि उठता है आहों का वाँ से धुवाँ

कुवेँ का है मुँह बंद और उस से अड़ी
कई लाख मन की है यक शिल पड़ी

सदा वाँ से आती है बद्रेमुनीर
तेरे चाह ग़म में हुआ हूं असीर

में भूला नहीं तुझ को ऐ मेरी जाँ
करूं क्या कि है मुझ पै क़ैदे गराँ

पर इस क़ैद में भी तेरा ध्यान है
फ़क़त तेरे मिलने का अरमान है।

तू अपनी जो सूरत दिखा दे मुझे
तू इस क़ैद ग़म से छुड़ा दे मुझे।

नहीं मुझ को मरने से कुछ अपने डर
यह ग़म है कि तुझ को न होवे ख़बर

तुझे काश इस वक़्त में देख लूं
जियूं मैं अगर तेरे आगे मरूं।

वलेकिन यह है ख़ाम मेरा ख़याल
नहीं वस्ल मुमकिन बग़ैर अज़ विसाल

कोई दम का मेहमान हूं आज कल
इसी चाह में जायगा दम निकल

यह सुन वारदाते शहे बेनज़ीर
जो चाहे करे बात बद्रेमुनीर।

यह हरगिज़ मयस्सर न आई उसे
क़ज़ा ने न इस की सुनाई उसे।

यकायक गई आँख इतने में खुल
भरे अश्क रुख़सार पर आय ढल

न वह चाह देखा न हमराज़ वह
पड़ी गोश में फिर न आवाज़ वह

सदा अपने मुख़ुफ़ की सुन ख़्वाब से
उठी बावली जांन बेताब से।

कहा गो किसी से न उसने यह भेद
वले चूं महे सुबह चेहरा सफ़ेद

ढले मुँह पै आँसू हुवा बस कि रंज
छुटे चाँदनी में सितारों के गंज।

वह महताब सा चेहरा हो ज़र्द ज़र्द
सरापा हुआ शक्ल अन्दोह दर्द

जिवस आह पिनहाँ से घुटने लगी
तो मुँह पर हवाई सी छुटने लगी

मिज़ा वह नुकीली जो थी तेज़ सी
हुई अश्क ख़ूनी से गुल रेज़ सी

भुचन्या सा क़द था जो रश्के अनार
निकलने लगे उस से शोले हज़ार

जली उस की आहों से कुल सूरतें
हुई सब वह मिट्टी की जो मूरतें।

छिपाया बहुत उसने पर हमनशीं
छिपाये से आतश छिपे हैं कहीं

किसी से किसी को जो होती है लाग
बग़ैर अज़ कहे और लगती है आग

ख़वासें कई वह जो हमराज़ थीं
बड़ी ख़िदमतों में सर अफ़राज़ थीं

कहा उनसे रो रो के अहवाल ख़्वाब
रोलाया उन्हें पढ़ के ग़म की किताब

सुना जब कि नजमुन्निसा ने यह हाल
हुई बेक़रारी तब उस को कमाल।

लगी कहने वह यों न आँसू बहा
तेरे वास्ते मैंने अब दुख सहा।

बस अब सर बसहरा निकलती हूं मैं
उसे ढूँढ़ लाने को चलती हूं मैं

जो बाक़ी रहा कुछ मेरे दम में दम
तो फिर आके यह देखती हूं क़दम

वगर मर गई तो बला से मुई
तो यों जानियो मुझ पै सदक़े हुई

कहा शाहज़ादी ने सुन से रफ़ीक़
हुई मैं तो इस चाह ग़म में ग़रीक़

भली चंगी अपनी न खो जान तू
कि है वह परी और इनसान तू।

रसाई तेरी होगी क्यों कर वहाँ
मुझे भी न दे हाथ से मेरी जाँ।

मैं जीती हूं इस आसरे पर फ़क़त
कि होता है तुझ से मेरा ग़म ग़लत

अगर नां मैं रुक रुक के मर जाऊंगी । इसी तरह जी से गुज़र जाऊंगी
कहा उसने फिर कीजिये क्या भला । पड़ी अब तो अपने हि सिर पर बला
मैं इस इश्क़ का यह न समझी थी डौल । तेरे ग़म से आने लगा मुझको हौल
मुझे देखना यों गवारा नहीं । इस अंदोह का मुझको चारा नहीं
यह कह उसने रो रो उतारा सिँगार । किया अपने पिशवाज़ को तार तार
गरेबान को मिस्ल गुल चाक कर । दिया ख़ाक पर फेंक ईधर उधर
फिर आये जो कुछ उसको होशो हवास । सजा तन पै जोगिन का उसने लिबास
पहिन सेली और गेरवाँ ओढ़ खेस । चली बन के सहरा को जोगिन का भेस
कई सेर मोती जला राख कर । भभूत अपने तन पर मली सरबसर
पहिन एक लहँगा ज़री बाफ़ का । वह परदा सा कर उस तने साफ़ का
ज़री के दुपट्टे से छाती को बाँध । बदन को छिपा और गाती को बाँध
ज़मुर्रद के मुंदरे लगा कान में । कि जों सब्ज़ा गुल हो गुलिस्तान में
गले बीच हाल अपने माले के तईं । परेशान कर अपने बालों की तईं
ज़री का बना हलक़ा सिर पर रखा । किया संबुलिस्तान को जगमगा
लटें दे के बल दोश पर छोड़ दीं । वह बागें सी शबदेज़ के मोड़ दीं
मये ग़म से आँखों को कर लाल लाल । रखा चश्म पर ख़ून दिल को निकाल
ज़मुर्रद की सुमरन को हाथों में डाल । और एक बीन काँधे पै अपने सँभाल
जो मन के थे मन के उसे कर दुरुस्त । पहिन अपने मौज़े से चालाको चुस्त
चली बन के जोगिन वह बाहर के तईं । दिखाती हुई चाल हर हर के तईं
तुफ़े सोज़ दिल का अयाँ मुँह से हाल । उड़ाती चली अपने आहों से राल
उस आईनारू का करूं क्या बयाँ । सफ़ा राख से और चमके वहाँ
करे हुस्न को किस तरह कोई माँद । छिपे हैं कहीं ख़ाक डाले से चाँद
छिपाने को स्वांग उसने जो जो किये । ग़रज़ हुस्न ने और जलवे दिये

वह मोती की सेली वह तन की दमक । शबे तीरा में कहू कशाने फ़लक ।
ज़री का वह हलका शिर ऊपर धरे । कि जों शब में कोई बंनेटी करे
ज़माने को भाई जो उसकी अदा । तो इस रात पर दिन को सदक़े किया
करे जो कि तक़वीम दिल से हिसाब । कहे है सम्बुला में गया आफ़ताब
यह वर्क़ और यह अवरे सियह है अगर । तो दामान उश्शाक़ होयंगे तर

तसवीर वज़ीरज़ादी का जोगिन बनना तलाश में शाहज़ादे के सामने शाहज़ादी और ख़वासों के ।

ज़मुर्रद के मुंदरे वह इस आन पर । कहूं क्या कि जैसे खुले कान पर
वह मुंदरे वह तन उस का ख़ाकिस्तरी । हुई इस्त की और खेती हरी
उड़े सब्ज़ा औ गुल के देख उस के होश । वह दोनों हुये उस के हल्क़ा बगोश

नज़र कर सफ़ाई को उस गोश की । ज़मुर्रद को उस गोश की लौ लगी ।
बढ़े क्यों न हरदम ज़मुर्रद की शान । जब ऐसे किसी के लगे जा के कान ।
वह मोती के माले वह मूँगों के हार । गुलो नस्तरन की चमन में बहार ।
गुलाबी से वह नरगिसे शोख़ रंग । भरे जिस में लाला के लाले के रंग ।
वह क़श्क़ा खिंचा सुर्ख़ माथे पै यों । पड़े नूर पर लाल का अक्स जों ।
अदा उसके देखे जो आशिक़ कभू । तो रोया करे चश्म से वह लहू ।
वह बीन उसके काँधे पै थी ख़ुशनुमा । चले जों कोई मस्त शीशा उठा ।
दियारे मुहब्बत में महँगी थी वह । न थी बीन इशरत की बहँगी थी वह ।
न थी बीन थे क़ुमक़ुमे रंग को । भोया थे सबू बहर आहंग को ।
सो वह बीन काँधे पै रख यों चलीं । कि लावे कोई जैसे गंगाजली ।
हर एक तार था बीन का रोद नील । वह थी हिन्द के राग की सलसबील ।
न आशिक़ हुये उस के आलम पै लोग । दिवाना हुआ जोग देख उस का जोग ।
बनी जब कि जोगिन वह इस रंग से । लगी फोड़ने दोस्त सिर संग से ।
वह रुख़सत जो इस तरह होने लगी । तो वह साहिबे ख़ाना रोने लगी ।
वह रोरो के दो अब्र ग़म यों मिले । कि जिस तरह सावन से भादों मिले ।
यहाँ तक बँधा उस का रोने का तार । बहे फूट दीदारो दर एक बार ।
खड़े थे वह जोगिन के जो गिर्द कुल । वह रोरो हुये शबनम आलूदा गुल ।
न देखा किसी ने जो कुछ इख़्तियार । कहा हक़ को सौंपा तुझे ले सिधार ।
चली जिस तरह पीठ अपनी दिखा । इसी तरह दिखला हमें मुँह फिरा ।
किसी ने कहा भूल यों मत मुझे । ख़ुदा के तईं मैंने सौंपा तुझे ।
कहा उसने ख़ैर अब तो जाती हूँ मैं । जो मिलता है तो उस को लाती हूँ मैं ।
तुम्हें भी ख़ुदा को मैं सौंपा सुना । मेरा बख़्शियो तुम कहा औ सुना ।
जुदा होके अल्क़िस्सा रोतों को छोड़ । चली अपने घरबार से मुँह को मोड़ ।

न सुध बुध की ली और न मंगल की ली निकल शहर से राह जंगल की ली ।
लिये बीन फिरती थी सहरा नवर्द तने चाक चाक और रुख़ गर्द गर्द ।
कि शायद कोई शख़्स ऐसा मिले कि जिस से वह शैदा को शैदा मिले ।
जहाँ बैठ कर वह बजाती थी बीन तो सुनने को आते थे आहूय चीन
बजाती वह जोगिन जहाँ जोगिया तो वाँ बैठती ख़ल्क़ धूनी रमा ।
उसे सुन के आता था सहरा को जोश सदा से दरख़्तों को आता ख़रोश ।
गुले नग़मा जा उस से गिरते हज़ार तो लेता उन्हें दश्त दामन पसार
कहीं हल्का हल्का कहीं सरबलरख़ खड़े हो के गिर्द उस के सुनते दरख़्त
बजाती थी जों जों वह बन बन के बीन ख़सो ख़ार सुनते थे बन बन के बीन
नज़र जो कि पड़ती थी बूटी जड़ी हर एक आलमे शौक़ में थी खड़ी
तमाशा न देखा था जो यह कभी दरें दश्त ग़श हो पड़े थे सही ।
यहाँ तक कि रह में जो के नक़्शे पा वह बैठे थे कान अपने ऊधर लगा
गुले नग़मये तर की यह थी बहार कि सहरा के गुल उसके आगे था ख़ार
सुन आवाज़ की उसकी शानो शिकोह निकलने लगी सब के आवाज़ कोह
न पानी ही सुन शोर उसका चले कुवें के भी दिल में उठे बलबले ।
न चश्मे ही कुछ आबदीदा रहे गरेबान कर चाक दरिया बहे
हवा बुलबुलो गुल का याँ तक हजूम कि गिरती थीं वाँ डालियाँ झूम झूम ।
तहय्युर का था वाँ हर एक को मुक़ाम ज़बाँ का निकलता था हाथों से काम
चमन करते फिरते थे जंगल तईं बसाते थे जंगल में दंगल तईं ।
यह हर जा पै था उसके दम से तिलिस्म बँधा था उसी दम क़दम से तिलिस्म
शबो रोज़ सर गश्ता मिस्ले सबा इसी तरह फिरती थी वह जाबजा ।

दास्तान फ़ीरोज़शाह जिन्नों के बादशाह के बेटे का आशिक़ होना जोगिन पर.

किधर है तू ऐ साक़िये गुल उज़ार। किसहरा से अब दिल हुआ ख़्वार ख़्वार

कोई फूल सी दे शिताबी शराब किसहरे मतालिब को पहुँचूं शिताब।

वह दारू पिला दिल को जो रास हो कि जीने की बीमार को आस हो।

मुसब्बब के असबाब देखो ज़रा कि क़ुदरत में उस के है क्या क्या भरा

सफ़ेदो सियह उस के है इख़्तियार बनाया है उस ने यह लैलो निहार

जहाँ में है अन्दोह इशरत बहम कहीं सुबह ऐशो कहीं शाम ग़म

दुरंगी ज़माने की मशहूर है कहीं साया है और कहीं नूर है

क़ज़ारा सुहाना सा एक दश्त था कि एक शब हुवा उस का वाँ विस्तरा

वह थी इत्तफ़ाक़न् शबे चारदह अदा से वह बैठी वहाँ रश्क मह

बिछी हर तरफ़ चादरे नूर थी यही चाँदनी उस को मंज़ूर थी।

बिछा मिरगछाले को औ लेके बीं दुज़ानू सँभल कर वह ज़ुहरा ज़बीं।

किदारा बजाने लगी शौक़ में लगी दस्तो पा मारने ज़ौक़ में।

किदारा यह बजने लगा उस के हाथ कि मह ने किया दायरा लौ के साथ।

बँधा उस जगह इस तरह का समाँ सबा भी लगी रक़्स करने वहाँ

वह सुन्सान जंगल वह नूरे क़मर वह बर्राक़ था हर तरफ़ दश्तो दर

वह उजला सा मैदाँ चमकती सी रेत उगा नूर से चाँद तारों का खेत

दरख़्तों के पत्ते चमकते हुये ख़सो ख़ार सारे झमकते हुये

दरख़्तों के साये से महका ज़हूर गिरै जैसे छलनी से छन छन के नूर

बया यह कि जोगिन का मुँह देखकर हुआ नूरो साये का टुकड़े जिगर

गया हाथ से बीन सुन कर जो दिल गये सावा और नूर आपस में मिल

वह सूरत ख़ुश आई जो उस हूर की	दिल अपने में साये ने मंज़ूर की।
हवा बँध गई उस घड़ी इस उसूल	बसेरा गये जानवर अपना भूल
दरख़्तों से लग लग के बादे सबा	लगी वज्द में बोल में वाह वा
कि दारे का आलम था यह उस घड़ी	कि थी चाँदनी हर तरफ़ ग़श पड़ी
यहाँ का तो आलम था और तौर यह	तिस ऊपर मज़ा तुम सुनो और यह
कि था यक परीज़ाद फ़र्रुख़सियर	जिनों के वह था बादशाह का पिसर
निहायत तरहदार साहिब जमाल	बरस बीस इक्कीस का सिन वो साल
हवा पर उड़ाये हुये अपना तख़्त	किसी तर्फ़ जाता था फ़ीरोज़ बख़्त।
वह जाता था करता हुआ सैर माह	उसे ख़ल्क़ कहती थी फ़ीरोज़ शाह
इका इक सुनी बीन की जो सदा	वहाँ तख़्त ला उसने अपना रखा
जो देखी तो जोगिन है इक इश्क़ हूर	कि चश्मे फ़लक़ ने न देखा यह नूर

तसवीर जिन्नों के बादशाह के बेटे की मैं दो जिन्नों के और जोगिन सामने बीन बजाती हुई ॥

नज़र कर के हुस्न उसका गश कर गया तअश्शुक़ के आलम में बस मर गया
यह समझा बनावट का कुछ भेस है लगा कहने जोगी जी आदेश है
पड़ा तुम पै ऐसा कहा क्या वियोग लिया वास्ते किसके तुमने यह योग
किधर से तुम आये कहाँ जाउगी दया अपनी हम पर भी फ़रमाउगी
वह समझी कि इसका दिल आया इधर कि दिल भी तो रखता है दिल की ख़बर
ख़सो ख़ार है इश्क़ हुस्न आग है सदा इश्क़ और हुस्न में लाग है
वले राग ही और उन में हुवा कि दोनों तरफ़ आग दी है लगा
कहा हँस के जोगिन ने हर बोल हर जहाँ से तू आया चला जा उधर
कहा तब परीज़ाद ने, वाह जी बहुत गर्म हैं आप अल्लाह जी
न रूखी हो इतने भला जाऊंगा ज़रा बीन सुन कर चला जाऊंगा
कहा होते सोते से अपने कहो फ़क़ीरों को छेड़ो न बैठो रहो।
यह दोरो लतीफ़े जो बाहम हुये इसी लुत्फ़ में यह तो बेदम हुये।
गया बैठ आ सामने रेत में रहा खेत यह तो उसी खेत में
नज़र हुस्न पर गाह गह बीन पर सरापा दिल उस लाबुते चीन पर
रहा तन बदन का न कुछ उसको होश बना गुल वह जो नक़शे पा चश्मो गोश
वह जोगिन जो थी दर्द ग़म की असीर हुवा ग़म में जोगिन के यह भी असीर
न सुध बुध की ली औ न ली राह की जब आई ज़रा सुध तो फिर आह की
बजाती रही बीन वह सुबह तक यह रोया किया सामने बेधड़क।
इधर तान पर बीन की थी बहार बँधा था उधर उस के रोने का तार
धरी अपने काँधे पे जब उसने बीन उठी लेके अँगड़ाई ज़ुहरा जबीन।
परीज़ाद ने तब पकड़ उसका हाथ शिताबी बिठा तख़्त पर अपने साथ
ज़मीं से उड़ा आसमाँ के तईं वह कितना कहा की नहीं रे नहीं
न माना और उस ने उड़ाया उसे परिस्ताँ में लाकर बिठाया उसे।

यह गुज़रा गया बाप पास अपने ले — कहा अर्ज़ रखता हूं मैं आप से
यह जोगी जो है एक साहिब जमाल — ज़रा बीन सुनिये और इन का ख़याल
बहुत आप उन से उठायेंगे हज़ — बहुत बीन से उस के पायेंगे हज़
कहा उस ने बाबा बहुत ख़ूब है — हमेशा से राग अपना मरग़ूब है
कहा आउ जोगी जी बैठो इधर — करो रौशन अपने क़दम से यह घर
खुले बख़्त बेटे के और बाप के — सिरों पर हमारे क़दम आप के
बहुत उस की ताज़ीमो तकरीम की — जगह एक पाकीज़ा रहने को दी

दास्तान फ़ीरोज़ शाह की मजलिस आराई और जोगिन के बुलाने में.

पिला मुझ को साक़ी मुहब्बत का जाम — कि मेहमानियों में हुआ दिन तमाम
यह जोगिन जो बैठी बिरोगिन हुई — कि इतने में रात आई जोगिन हुई
भभूत अपने मुँह पर शिताबी से मल — रख अंडवे को मह के शब आई निकल
दिखाती हुई सोज़ दिल दूर से। — उड़ाती हुई राल को चूर से।
सितारों के माले गले बीच डाल — वह पहुँची परिस्तान में हाल हाल
हुई शब जो वह बज़्म अंजुम फ़रोज़ — छिपा रश्क से उस के परदे में रोज़
मलिक ने परिस्ताँ में मजलिस बना — बुलाया उसे जिस की थी यह सना
परीज़ाद सारे हुये जमअ वाँ — कि देखें तो जोगिन का चल कर समाँ
वह जोगिन की सज धज थी जुहराजबीं — सो मजलिस में आई लिये अपनी बीं
बहुत मिन्नतों से बुलाया उसे — बड़ी इज़्ज़तों से बिठाया उसे।
कहा हम हैं मुश्ताक़ कुछ गाइये — समाँ बीन का हम को दिखलाइये
कहा कुछ बजाना नहीं अपना काम — हर एक तरह लेना है मैं हरि का नाम
हैं बेज़ार फ़रमाइशों से फ़क़ीर — वले क्या करें अब हुए हैं असीर

कहा जोगी साहब यह क्या बात है। कसम आप का हम में ये दिन रात है
जो मरज़ी हो तो तुम को तकलीफ़ दें नहीं जिस में राज़ी हो तुम सो करें
कहा इस तरह से जो फ़रमाउगे। तो हाँ बन्दगी ही में कुछ पाउगे।
यह कह उसने और बीन काँधे पै धर यहाँ तक बजाई कि दीवारो दर
खड़े रह गये होश खोये हुये नज़र जो पड़े वाँ सो रोये हुये
गया अहल मजलिस का दिल जो पिघल तो जों शमअ अश्क आये इसके निकल
हुई बीन पर अँगुलियाँ यों दवाँ कि हाथों से उस के हुवा दिल रवाँ
खानो रवाँ कर दिया जान को रुलाया हर एक जिन्न इन्सान को
हुआ हाल पर उसका यह कुछ तबाह वह आशिक़ जो था उसका फ़ीरोज़ शाह
कभी सामने आके करता नज़र कभी देखता छिप के इधर उधर
सितूं के कभी ओट में होके वह खड़ा देखता उस को रोरो के वह
कभी इधर ऊधर से फिर फिर के आ छिपे उसके मुखड़े की लेता बला
वह गो कुछ न सुनती न कहती उसे कनखियों से पर देख रहती उसे
नज़र उसकी जब आन पड़ती उधर तो यह और की तर्फ़ करती नज़र
इस आनो अदा पर वह फ़ीरोज़ शाह दिलो जाँ से करता था इस लहज़ा आह
अगर कोई जोगिन की करता सना तो खारश्क कहता कि फिर तुम को क्या
ग़रज़ थी यह सुहबत कि मैं क्या करूं यही दिल था उसका कि देखा करूं।
बजी पहली सुहबत में वाँ ऐसी बीन कि ग़श कर गये वे जो थे नुक़ता चीन
सराहा परीज़ाद के बाप ने कहा कि दया जोगी जी आपने
इसी तरह हर शब करम कीजिये मिरी बज़्म रश्के इरम कीजिये।
मुक़द्दस हमारा रिझाना करो हमें अपना माश्शूक़ जाना करो।
यह घर बार है आपही का तमाम हुये आज से हम तुम्हारे ग़ुलाम
तकल्लुफ़ को मौक़ूफ़ कर दीजिये जो कुछ तुम को दरकार हो लीजिये

कहा उस ने मतलब नहीं कुछ हमें   तुम्हारा मुबारक रहे घर तुम्हें।
कहाँ तुम कहाँ हम भला यह जो साथ   यह थी बात सब आबोदाने के हाथ
यह कह वाँ से उट्ठी वह जोगिन उधर   लिया था जहाँ उस ने रहने को घर
लगी रहने उस में शबो रोज़ वह   समुझ जी में कुछ २ दिल अफ़रोज़ वह
कहा अपने जी से कि सुनता है जी   न घबराइयो अपने दिल में कभी
बुबीनम कि ताकिर्द गारे जहाँ   दरी आशकारा चि दारद निहाँ
ग़रज़ इस तरह उस का मामूल था   कि उस शाह परियों की ख़िदमत में जा
पहर रात तक हँसती और बोलती   हर एक बात में क़ंद थी घोलती
बजाने में सब को रिझाती थी वह   पहर के बजे घर में आती थी वह
चले क्या कहूं हाल फ़ीरोज़ शाह   कि थी दिन बदिन उस की हालत तबाह
न दुनियाँ की उस की न दीं की ख़बर   इसी की तसव्वुर में शामो सहर
उसी शम्अ के गिर्द फिरना उसे   पतंगे के मानिन्द गिरना उसे।
बहाने से हर काम के रोज़ो शब   वहीं काटनी उस को औक़ात सब
इसी तरह औक़ात खोना उसे   सदा बीन सुन सुन के रोना उसे।
वह जोगिन भी सौ सौ तरह कर अदा   हर एक तान में उस को लेती लुभा।
चले कुछ भी पाती जो इस से तलब   तो आशिक़ पै ग़ुस्सा वह करती ग़ज़ब
कभी ख़ुश किया और किया गह उदास   कभी दूर बैठी कभी उस के पास
किया उस ने परदे में जब कुछ सवाल   दिवाना किया उस को बातों में डाल।
कभी तीखी नज़रों से घायल किया।   कभी मीठी बातों से मायल किया।
कभी टेढ़ी नज़रों से मारा उसे   कभी सीधे दिल से पुकारा उसे
कभी हँस के देखा ज़रा ख़ुश किया   कभी हो के ग़मगीन नाख़ुश किया।
कभी मुँह छिपाया दिखाया कभी   कभी मार डाला जिलाया कभी
लटों में कभी दिल को लटका लिया   कभी साथ बातों के झटका दिया

वह हरचन्द आँखें दिखाती रही
पै नज़रों से दिल को लुभाती रही

विचारा परीज़ाद वह सादा दिल
अदायें यह इन्सान की मुत्तसिल।

इसी तरह मुद्दतें गईं जब उसे।
चढ़ी गर्मी ये इश्क़ की तप उसे

न मुँह पर वह आलम रहा वोरंग नूर
कई दिन में दिल हो गया चूर चूर

जिगर खूँ हो आँखों से आया निकल
गया दिल सब अन्दर ही अंदर पिघल

यह दी पर दये दिल से जीने सदा
कि है सब की अपने बस इन्तिहा।

जो कहता है उससे तो कह हाल दिल
कि अब तंग है अपना अहवाल दिल

सँभलता है अब भी तो ज़ालिम सँभल
नहीं कोई दम में चला मैं निकाल

भला कर तो अब दस्त अफ़सोस को
पड़ा रह लिये नंगो नामूस को

यह सुन जी का पैग़ाम मजबूर हो
कहा अपने नज़दीक़ को दूर हो

बला से अगर आन रहती नहीं
कि अब बिन कहे जान रहती नहीं

ग़रज़ एक दिन बात यह ठान कर
लगा घात पर अपने वह ध्यान कर

न था उस घड़ी कोई ईधर उधर।
अकेली पड़ी उसको जोगिन नज़र

अकेली उसे देख हो बेक़रार।
गिरा पाँउ पर उसके बेइख़्तियार

गिरा इस तरह से क़दम पर जो वह
तो कहने लगी मुसकरा उसको वह

कि है आज यह क्या ख़िलाफ़े क़यास
गिरा इतना ढ्हो के क्यों बेहवास।

किसी ने तेरा दिल सताया कहीं
क्यों जी को तेरे लुभाया कहीं

मेरे बैठने से अज़ीयत हुई।
कि मेहमानियों की मुसीबत हुई

फ़क़ीरों से इतना न हो तू ख़फ़ा
चले हम भला जा तेरा हो भला।

अज़ीयत मगर हमसे पाता है तू
कि अब पाऊं पड़ पड़ उठाता है तू

लगा कहने रोरो के फ़ीरोज़ शाह
कि बस बस यही तो कहोगी न वाह

तुम्हारी समझ ने तो मारा हमें
यह बातें नहीं अब गवारा हमें

सताये हुये को सताती हो क्या
जले दिल को नाहक़ जलाती हो क्या

हुई तुम न वाक़िफ़ मेरे हाल से। फ़िदा मैं रहा जान औ माल से

तुम अपना शाशुभा को समझते रहे भला तुम को अब याँ कोई क्या कहे

तुम ऐसीही बेरहम बेदर्द हो ग़रज़ अपने आलम में तुम फ़र्द हो

कहा उसने लेकर शिताब अपना हाल कि तू क्यों गिरा सिर को पावों पे डाल

कहा तब परीज़ाद ने मेरी जाँ कहाँ तक करूं राज़ दिल को निहाँ

भला हिज्र में कब तलक हूं मलूल ग़ुलामी में अपने मुझे कर क़बूल

लगी हँसके कहने कि एक तौर से जो मेरी कहानी सुने ग़ौर से।

मतालिब अगर मेरे बर लाये तू तो शायद मुराद अपनी भी पाये तू

कहा उसने फिर जल्द फ़रमाइये। जो कुछ आप से हो बजा लाइये

कहा उस ने यह है मेरी दास्ताँ। कि शहरे सरन्दीप है यक मकाँ

मलिक एक वाँ का है मसऊद शाह कि बेटी है यक उसके मानिन्द माह।

जहाँ में है बद्रेमुनीर उस का नाम मैं रहती हूं ख़िदमत में उसके मुदाम

बनाया है उसने अलक एक बाग़ कि फ़रदौस का है वह चश्मो चराग़

जुदा बाप से थी वह उस जा मुक़ीम सदा सैर करती थी बेख़ौफ़ो बीम।

मैं नजमुलनिसा उसके दुख़्ते वज़ीर हमेशा से हमराज़ थी औ मशीर

जुदा एक दम उस से होती न थी सुलाये बग़ैर उस के सोती न थी।

ख़ुशी से सरोकार ग़म से फ़राग़ बरंगे चमन रहती थी बाग़ बाग़

किसी तरह का ग़म न था ध्यान में तरक़्क़ी ख़ुशी की थी हर आन में

हुई एक दिन यह अजब वारदात कि एक शख़्स वारिद हुवा एक रात

कहाँ तक कहूं उस का क़िस्सा है दूर न था आदमी नूर का था ज़हूर।

गया उस पै उस शाहज़ादी का दिल गये एक दोनों वह आपस में मिल

चले आशिक़ उस पर थी कोई परी मुहब्बत में थी उस के वह भी भरी

कहीं वाके आने की सुन कर ख़बर ख़ुदा जाने फेंका है उस को किधर

गोया क़ैद में उस को डाला कहीं। कि मुद्दत से उस की ख़बर कुछ नहीं।
सो मैं खोज में उस के जोगिन हुई। यहाँ तक तो पहुँची बिरोगन हुई॥
परीज़ाद आपस में तुम एक हो। अगर तुम ज़रा खोज उस का करो॥
तो शायद मदद से तुम्हारी मिले। तो फिर आरज़ू भी हमारी मिले॥
दिल आबाद हो जी को आराम हो। तुम्हारा भी इस काम में काम हो॥
कहा तब परीज़ाद ने हाथ ला। अँगूठा दिखाया कि इतरान जा॥
कहा फिर यही कुछ नहीं महजबीं। लगी हँस के कहने नहीं रे नहीं॥
यह सुन क़ौम को अपनी उसने बुला। तअम्मुद से सब को बुला कर कहा॥
कि जावो तो ढूँढ़ो करो मत कमी। कि है एक परिस्ताँ में क़ैद आदमी॥
जो तुम में से लावेगा उसकी ख़बर। जवाहिर का दूँगा लगा उस के पर॥
यह सुन अपने सरदार का यह कलाम। तजस्सुस में फिरने लगे सुबहो शाम॥
हुआ एक का नागहाँ वाँ गुज़र। जहाँ क़ैद में था वह ख़स्ता जिगर॥
वह रोता जो था नाला ओ आह से। तो कुछ उस को आई सदा चाह से॥
कहा कुछ तो मिलता है याँ से सुराग़। कि आती है याँ बूए गुलज़ारो बाग़॥
वह चौकी के जो देव थे आ बजा। लगा पूँछने किस की है यह सदा॥
कहा माहरुख़ का है क़ैदी यहाँ। कुवें में तड़पता है एक नौजवाँ॥
वह तहक़ीक़ कर और ले वाँ का भेद। उड़ा शहर को अपने देवे सफ़ेद॥
किया आके फ़ीरोज़ शह को सलाम। सुन आया जो कुछ था सुनाया कलाम॥
कहा मेरा मुज़रा है अब लाइये। जो देने कहा है सो दिलवाइये॥
यह मामूल था वाँ के इनआम का। जवाहिर के उस को दिये पर लगा॥

दास्तान पैग़ाम भेजने में फ़ीरोज़शाह के माहरुख़ को।

यह भेजा फिर उस माहरुख़ को पयाम। कि क्यों ज़ीस्त करती है अपनी हराम॥

बनी आदमी को तू चोरी से ला। छिपाती है घर में तू अशुक़ जता।
तेरे बाप को गर लिखूं तेरा हाल तो क्या हाल हो तेरा फिर ऐ छिनाल
अज़ीज़ अपनी रखती नहीं जान को यही है कि फूँकूँ परिस्तान को
तेरा संग ग़ैरत से उड़ता नहीं। तुझे क्या परीज़ाद जुड़ता नहीं
हमारा गई भूल ख़ौफ़ो ख़तर लगी रखने इनसान पर तू नज़र
भला चाहती है तो उसको निकाल कुएँ में जिसे तू ने रक्खा है डाल।
और इसकी क़सम खा कि फिर गर कहीं लिया नाम उस का तो फिर तू नहीं
गया माहरुख़ को यह फ़रमान जब हुई ख़ौफ़ से यह परेशान तब
कहा मुझ से तक़सीर अब तो हुई कहो उस को लेजाय यां से कोई
अगर अब मैं लाऊं हूं उसके कभी तो फिर फूंक दीजो मुझे तुम तभी
पर इतना यह अहसान मुझ पर करो कि इस का परिस्ताँ में चर्चा न हो
मेरे बाप को फिर न होवे ख़बर कि फिर मैं न इधर की हूं ना उधर
यह सुनकर जवान उस का फ़ीरोज़शाह चले अपने घर से जहाँ था वह चाह
सरे चाह पर जब वह पहुँचा रफ़ीक़ कहा उन को थे वह जो उसके शफ़ीक़
कि यह संग उखड़े यहाँ से हिले किसी तरह छाती से पत्थर टले
वह पत्थर जो था कोह सा संगे राह दिया फेंक वाँ से उसे शक्ल काह
वह बादल सा सरका जो उस चाह से तो यक नूर चमका शबे माह से
अँधेरे से उस चाह के उस का तन नज़र यों पड़ा जैसे काले का मन
वह मन डाले उस में पड़ा था जवाँ कहा उस परीज़ाद ने सब को हाँ
निकालो अमानत इसे इस नमत कि लेते हैं चू मुश्क से जिस नमत।
तुम्हें इहतियात इसकी अब है ज़रूर समझियो इसे अपनी पुतली का नूर

दास्तान कुवें से निकलने में बेनज़ीर के।

क़दहभर के लालां साक़िये बेतमीज़ । कुवें से निकलता है यूसुफ़ अज़ीज़
गये दिन ख़िज़ाँ के और आई बहार । भये लालायूँ से दिखा लाल ज़ार
गुलाबी झमकती पिला दे मुझे । समा कोई ऐसा दिखा दे मुझे
कि वह माहे नख़शब कुवें से निकल । मनाज़िल को अपने फिर आवे महल
कोई देव था वाँ सिकन्दर निज़ाद । कुवें में उतर कर वह सबे मुराद
अलंगपों ले आया कुवें से निकाल । कि फ़व्वारा जों आप को दे उछाल
ले आया वह जों ख़िज्र सौ थाल से । निकाल आवे हैवाँ को ज़ुल्मात से
हुवे मस्त उस नाज़ बू से वह कुल। कि निकला वह संबुल से मानिन्द गुल
अँधेरे से निकला वह रोशान बयाँ । कि हर्फ़ों से जो होवें मानी अयाँ
वह जीता जो निकला वले इस तरह । कि बीमार हो नज़्अ में जिस तरह।
ज़िबस ऊपर आने का था उसको ग़म । कोहें दू कि भरता था ऊपर को दम
ज़मी ख़ाक तन पर बरंगे ज़मीं। गड़ा जैसे निकले है पुतला कहीं
न आँखों में ताक़त न तन में तवाँ । कि जों ख़ुश्क हो नरगिसे बोस्ताँ।
वह तन सुर्ख़ जो था सो पीला हुवा । वह जोड़ा जो था सब्ज़ नीला हुवा।
वह सिर में जो थे उसके संबुल से बाल । हुवे लाग़री से बदन को वबाल
फ़क़त पोस्त बाक़ी था और उस्तख़्वाँ । न था ख़ून का रंग भी दरमियाँ
बदन से रगों की थी इस ढब नमूद । कि उलझी हो जो रेशमाने कबूद
बदन ख़ुश्क ओ ज़र्द इस तरह था वह गुल । ख़िज़ाँ दीदा हो जिस तरह बर्गे गुल
वह नाख़ुन जो थे उसके मिस्ले हिलाल । सो वह हो गये बढ़के बड़े कमाल।
यह देखा जो अहवाल उसका तबाह । तो रोता हुआ जल्द फ़ीरोज़ शाह
बिठा तख़्त पर अपने उसको वहाँ । ले आया वह बैठी थी जोगिन जहाँ

तसवीर कुवें से निकलवाना बेनज़ीर का बहुक्म शाहज़ादा अजिन्नावसई वज़ीरज़ादी नजमुलनिसा.

रखा तख़्त एक जा पै उस का छिपा / कहा फिर यह जा कर कि नजमुन्निसा
चल अब तो कि मैं उसको लाया यहाँ / यह सुनते ही घबरा के बोली कहाँ।
दिवानी थी अज़बस वह उस नाउँ की / न सिर की रही सुध न कुछ पाउँ की
कहा चल कहाँ है बता तू मुझे / ज़रा उस की सूरत दिखा तू मुझे
कहा रहियो के चलियो ज़रा थम रहो / कि शादी बड़ी है कहीं ग़म न हो
यह कह और ले हाथ में उसका हाथ / ले आया वह जोगिन को वाँ साथ साथ
गया आप उस तख़्त पर बैठ और / दिखाया उसे और कहा कर तू ग़ौर
जिसे ढूँढती थी सो यह है वही / कहा हाँ रे हाँ यह वही है वही
यह कह और उस तख़्त के पास आ / कहा से परीज़ाद तू उठ ज़रा।
कि इस तख़्त के गिर्द यक दम फिरूं / बलायें मैं दिल खोल कर इस की लूं
कहा उस ने हँस कर भला देख तो / तू इस बात पर मेरे सदक़े न हो

कहा उसने तब अपनी अंगूठी दिखा। अरे देख तू क्यों दिवाना हुवा
ग़रज़ वह परीज़ाद नीचे उतर खड़ा हो गया तख़्त से हो उधर
यह उस तख़्त के गिर्द फिरने लगी बला उस की लेले के गिरने लगी।
गले लग के रोने लगी ज़ार ज़ार किया अपने तन मन को उस पर निसार
वह देखे जो टुक आँख उठा बेनज़ीर तो नजमुलनिसा है यह दुख़्ते वज़ीर
कहा तू कहाँ और किसका यह जोग कहाँ यह लिबास और कहाँ तुम थे लोग
कहा तेरे ग़म ने दिवाना किया कि आलम में अपना बिगाना किया
बग़ल खोल कर फिर तो आपुस में मिल वह रोया किये देर तक मुत्तसिल
बयाँ हाल दोनों जो करने लगे हुवे अश्क से चश्म भरने लगे
कही सरगुज़श्त उसने उस दम तलक कि इस तरह पहुँचे हो तुम हम तलक
यह सुन बेनज़ीर अपने दिलसोज़ से लगा शाद होने उसी रोज़ से।
किया एक दिन तो उन्होंने मुक़ाम चले दूसरे दिन वह नज़दीक़ शाम
उसी तख़्त पर बैठ कर वह उधर कि था नक़्शे मतलूब जिनका उधर
वह जोगिन वह फ़ीरोज़ शाह और वह माह चले तख़्त पर बैठ ऊपर की राह
पढ़े हर्फ़ मतलब तो कुछ शोच कर तो बेकस्द बैठे मुसल्लम के घर
मुरब्बा नशीं थीं जो बद्रेमुनीर वहाँ उस को लाई वह दुख़्ते वज़ीर
उतारा वहीं ला दरख़्तों में तख़्त दुबारा खुले उन दरख़्तों के बख़्त
अकेली उतर वाँ से आई उधर लिये सोग बैठी थी वह मह जिधर
यकायक जो आ वह क़दम पर गिरी तो फ़िक़री वह शहज़ादी और कुछ डरी
फिर आख़िर जो देखा वो जोगिन है यह मेरे दर्द ग़म की बिरोगिन है यह
कहा मेरी नजमुलनिसा तू है जाँ अरी तेरी सदक़े मेरी मेहरबाँ।
हमें तेरे मिलने की कब आस थी कि जीने से अपने हमें यास थी
बहुत उस ने चाहा कि होवे खड़ी खड़ी होते होते वहीं गिर पड़ी

कहा चारे ग़म से इत्तफ़ाक़ात नहीं
करींक्याकरूँमुझ में ताक़त नहीं।
बलायें लगी लेने नजमुलनिसा।
लगी गिर्द फिरने बरंगे सबा।
उसे शाहज़ादी कथा हाल याद
जोदेखातो याँ उस कोकुछहैज़ियाद
नघरकीवहरौनक़नउस्कावहहाल
गुलोंसेंलगादिल तलक पायमाल
परे सारे बेदाश्त दीवारो दर।
महल को जो देखा तो टूटा सा घर
ख़वासें जो थीं पास वह नाज़नी
सो मैली कुचैली कहीं की कहीं
न चोटी गुँधी औ न कंघी दुरुस्त
जोचालाकथीबनगईवहभीसुस्त
हरएकअपनेआलममेंदेखोतोदंग
उड़ा रंग चेहरे का मिस्ले पतंग।
नआपुसकीचुहलेनवहचहचहे
न गाना बजाना न वह क़ाहक़हे
ग़म आलूदा हरएक ज़ारो नज़ार
न आराम जी को न दिल को क़रार
जो बैठी तो रोनाजो उठी तो ग़म
ग़रज़ बैठते उठते उस पर सितम।
चमन सारे वीरान से हैं पड़े।
शजरगुलकेएकझाड़ सेहैं खड़े।
जो ख़ुद है तो हैरान बीमार सी
कि जो ज़र्द शीशे के हो आस्सी
न ताबों तवाँ औ न होशोहवास
जईफ़ो नहीफ़ो परेशाँ उदास।
यहदेखउस्का अहवालनजमुन्निसा
जली शमअ की तरह आँसू बहा
बलेकिनमहलमेंपड़ीजबयहधूम
कियामिस्लपरवानाउसपरहजूम
सुनी एक ने एक से यह ख़बर
मुबारकसलामतहुई यक दिगर
कोईग़ुंचा की तरह खिलने लगी
कोई दौड़ करउस से मिलने लगी
टके कोई सदक़े के लाने लगी
कोई सिर से रोटी छुवाने लगी
कोई आई बाहर से घर से कोई
इधर से कोई और उधर से कोई
हक़ीक़त लगी पूँछने आ कोई
लगी करने आपस में चरचा कोई
हुवा सिर पे उसके ज़िबस इज़दहाम
लगी करने घबरा के सब को सलाम
कहा बीबियो कल कहूँगी मैं हाल
कि अब राह की माँदगी है कमाल।

वहअंबोहजबकुछहुवाबरतरफ़ । तोफिरदेखनजमुलनिसाकीतरफ़
कहा शाहज़ादी तू आती नहीं । इधर अपनी तशरीफ़लाती नहीं
चलो चलकेआरामटुक कीजिये । कुछइकतुमसेकहनाहैसुनलीजिये
गईजबकिख़िलवतमेंबद्रेमुनीर । कहा मैं ले आई तेरा बेनज़ीर
यहसुनएकदमतोवहग़शकरगई । कहे तू कि हैरत में आ मर गई
तअज्जुबसेपूँछाकिसचमुचहैयह । चया छेड़ने को मेरे कुछ है यह
कहामुझकोसौगंधइसजानकी । ग़लत कहने वाली मैं क़ुर्बान की
निशातोख़ुशीकीख़बरयकबयक । नहीं मुँह पै कह बैठती बेधड़क।
कहा क्योंकिलाईकहाइसतरह । वहसबकहदियाहालथाजिसतरह
तेरा क़ैदी जा कर छुड़ा लाई हूं । औरएकऔरबँधुवाउड़ा लाई हूं
कहाँफिरवहदोनोंकहाँ हैं कहाँ । दरख़्तों में उन को रखा है छिपा।
अजब वक़्त में मैं हुई थी जुदा । किदिलबरकोतेरेदिया ला मिला
मगर एक यह आ पड़ी बेबसी । कि मैं तेरे ख़ातिर बला में फ़ँसी
सो अबएककोतो लेआती हूंमैं । हवा दूसरे को बताती हूं मैं ।
यहसुनशाहज़ादीहँसी खिलखिला । कहाक्योंउड़ातीहै नजमुलनिसा
अरी एकही तू बड़ी क़हर है । कहीं तू है अमृत कहीं ज़हर है
चल अबचोचलेबसज़ियादा न कर । उन्हें जाके जल्दी ले आ तू इधर
कहा फिर परीज़ाद के रूबरू । बग़ैर अज़ किसी के रही होगी तू
कहा वह तो ऐसा दिवाना नहीं । वह इसबातकोक्याकहेगा नहीं
अगरदिलमेंकुछतेरेबसवास है । नहीं दूर वह भी तेरे पास है।
ज़रा पूँछ लीजो तो इस बातको । कि वह रूबरू उस के हो या न हो
यहसुनकरशिताबीगईवहनिगार । लियाजाकेआहिस्ताउनकोपुकार
छिपाये हुये ला बिठाया वहाँ । वहख़िलवतकजोथाक़दीमीमकाँ

फिर इससे यह पूछा कि ऐ बेनज़ीर। कहाँ तू चली आय बद्रे मुनीर।
कहाँ ख़ैर है तुझको रश्के चमन। छिपे है कहीं भाई से भी बहिन
मेरा जानो माल उसपै क़ुर्बान है कि उस के सबब से मेरी जान है
मेरा यह तो हमदम है दिन रात का मुझे इससे परदा है किस बात का

दास्तान बेनज़ीर और बद्रे मुनीर के मिलने की और उसके बाप को ब्याह का रुक़्क़ा लिखने में।

मेरे मुँह से साक़ी पिला दे शराब कि मिलते हैं बाहम महो आफ़ताब
यह सुन सुन के बातें वह परदानशीं चली आई याँ नाज़ से नाज़नीं
हया से फिर आकर जो बैठी वह पास फिर आये गये उसके होशो हवास।
नज़र से नज़र जो मिली एक बार किये चश्म ने लालो गौहर निसार
उधर चश्म ख़ूनी इधर चश्म नम उसे इसका ग़म और इसे उसका ग़म
न वह रंग उसका न वह उसका हाल तने ज़र्द ज़र्द और रुख़े लाल लाल
बहम वह ख़िज़ाँ दीदा गुलज़ार से मिले जैसे बीमार बीमार से।
अजब सुहबत आपुस में उस दम हुई कि ऐसी भी सुहबत बहुत कम हुई।
वह नज्मुन्निसा और वह फ़ीरोज़ शाह हया से किये अपनी नीची निगाह
सरिश के मुहब्बत बहाने लगे इस अहवाल पर ख़ौफ़ खाने लगे
और इक तर्फ़ को शाहज़ादा निढाल लगा रोने आँखों पै रखकर रुमाल
वह मजरूह दिल थी जो बद्रे मुनीर लगी खींचने अपनी आहों के तीर
छिपा मुँह को उस तर्फ़ से नाज़नीं लगी करने तर दामनो आस्तीं
पड़ी ग़म की बातें जो आदरमियाँ यह रोई कि लग लग गईं हिचकियाँ
ग़रज़ देर तक मिलके रोते रहे जुदाई के दाग़ों को धोते रहे

रुख़े.ज़र्द पर अश्क गुलगू बहा बहारो ख़िज़ा को किया यक जा।
कलेजों पे भी दाग़ थे बे शुमार सो आँखोंसे उन के दिखाई बहार
फिर आख़िरको नख़्लिसा वहशरीर लगी कहने सुनली है बद्रे मुनीर।
किया चाहती है तु अब क़हर क्या ज़ियादा न बस अपनी उल्फ़त जता।
मगर तेरे ख़ातिर यह रोया है कम कि तू और रोरो के देती है ग़म
ज़रा तन में आने दे इसके तवाँ अभी इसको रोने की ताक़त कहाँ
यह मुरदा सा लाई हूं मैं इसलिये कि देखे से तेरे शिताबी जिये।
यहाँ मैं ने इसकी नहीं की दवा कि है ख़ानये यार दारुश्शफ़ा।
ले आई है इसको मुहब्बत की धुन जिया है फ़क़त तेरे मिलने की सुन।
इसे वस्ल की अपनी दारु पिला किसी तरह इस नीमजाँ को जिला
बस अब कुछ ख़ुशी की करो गुफ़्तगू ख़ुदा फिर न तुम को रुलाये कभू।
नहीं ख़ुशख़ुशा पास आये हुये रहैं दो जने मुंह ढ़ाये हुये।
वह सुन हँस पड़े सब वह आपुस में मिल पड़ें जिस तरह फूल गुलशन में खिल।
बहम फिर तो होने लगे इख़्तलात उपजने लगे दिल से ऐशो निशात
शब आधी गई फिर तो ख़ासा मँगा तकल्लुफ़ से हर यक के आगे धरा
अजब ज़ुहलसे सबने आपुस में मिल किया नोश हस्बे तमन्नाय दिल
फिर आख़िर को दो दो जुदा हो गये अलग ख़्वाबगाहों में जा सो गये
उठाये थे जो जी के रंजो मलाल। हुये इस मज़े में वह ख़्वाबो ख़याल
अलग होके लेटी जो वह माहरू हुई लेटे लेटे अजब गुफ़्तगू।
वह गुज़रा हुआ याद कर करके हाल लगे रोने आँखों पै धरकर रुमाल
कहा शाहज़ादे ने अहवाल सब कुवें में जो गुज़रा था रंजो तअ़ब
कि यों मैं अँधेरे में रोया किया कुवें में तन अपना डुबोया किया
न पहुँचा कोई अपना फ़रयादरस तड़पता रहा दिल बरंगे ज़रस।

वह तारीक खाना मेरा घर रहा । सदा मेरी छाती पै पत्थर रहा ।
मुहब्बत ने यह चाशनी और दी । कि मेरे तईं जीते जी गोर दी ।
ज़मींसे निकलनेकी कब आशा थी । फ़लक के मुझे हाथ से यास थी
अजब तरह से ज़ीस्त करता रहा । तेरी जान से दूर मरता रहा
ख़ुदाही ने तुझसे मिलाया मुझे । उठा क़ब्र से फिर जिलाया मुझे
दिया शाहज़ादी ने रो रो जवाब । कि मैंने भी यक शब यह देखा था ख़्वाब
तेरे दाग़ की दिल में जो बू गई । मैं यक रात रोती हुई सो गई
तो क्या देखती हूं कि सहरा है एक । और उस दश्त बस में कुआँ सा है एक
सदा वाँ से आती है बद्रेमुनीर । इधर आ कि याँ क़ैद है बेनज़ीर ।
मैं हरचन्द चाहा करूं तुझसे बात । चली की गई वाँ न कुछ मुझसे बात
मेरी जान गो उस तरफ़ ढल गई । उसी दम मेरी आँख फिर खुल गई
अजब उस घड़ी मुझ पै गुज़रा क़लक़ । कि दिल और जिगर हो गया मेरा शक़
उसी दिन से यह हाल पहुँचा मेरा । कि मरती रही नाम लेले तेरा ।
न देता था गो कोई तेरी ख़बर । वले था तेरे ग़म से दिल को असर
गुज़रता था वाँ तुझ पै जो सुब्हो शाम । वह अन्धेर था मुझ पै रोशन तमाम
वह कहती मैं किससे यह दर्दे निहाँ । शबो रोज़ जलती थी मैं शमअ साँ
अजब तरह से ज़ीस्त करती थी मैं । कि उस ज़ीस्त करने से मरती थी मैं
इसी ग़म में रहती थी लैलो नहार । कि क्योंकर मिलावेगा परवरदिगार
मेरी शक्ल पर रोके नजमुन्निसा । गई इस तरह हाल अपना बना
फिर आगे तो मालूम है उसको सब । कि हम तुम मिले फिर उसी के सबब
यह आपस में कह हाले दिल रो उठे । वह कहने को सोये थे बस सो उठे
जो मिलते हैं बिछुड़े हुवे एक जा । उन्हें नींद बातों में आती है क्या
परीज़ाद नजमुन्निसा वाँ जुदे । अलग अपनी बातों में मशग़ूल थे

कटी रात हर्फ़ो हिकायात में। सहर हो गई बात की बात में
शबे वस्ल की जो सहर हो गई तो सोतों को गोया ख़बर हो गई।
छिपा माह ने अपने मुँह पर नक़ाब उठे बिस्तरे ख्वाब से आफ़ताब।
सबूही को उठता है जैसे मुदाम शराबे शफ़क़ से भरे अपना जाम
लिये रोज़ को साथ आने लगा। वह सोतों को शब के जगाने लगा
हुआ चश्म वाजिब वह मिज़गां दराज़ सफ़ेदो सियह में हुआ इम्तियाज़।
गया उक़्दये सुबह उस दम जो खुल निकल आये इधर उधर से वह गुल
उठे जब कि आपुस में गुलफ़ाम वह गये बारी बारी से हम्माम वह
दुबारा किया सबने अपना श्रृंगार चमन में नये सिर से आई बहार
वह जोगिन हुई थी जो नज्मुन्निसा जमी गर्द वह अपने तन की छुड़ा
नहा धो के निकली अजब आन से कि इल्मास निकले हैं जो कान से।
नहाने से निकला अजब उस का रूप निकल आये बदली से जिस तरह धूप
चले आग उस ने लगाई यह और कि पोशाक की सुर्ख़ लाले के तौर
जलाने को आशिक़ को दिखला फबन लिया सुर्ख़ लाही का जोड़ा पहिन
तमामी का संजाफ़ उस पर लगा तिला की तरह से दिया दग दगा
उसी रंग के साथ का सब लिबास तसब्बुर में हो सुर्ख़ जिसके लिबास
भभूका सा तन और मुँह की दमक कि जो शोला आतश से उट्ठे भड़क
नोकीली वह उट्ठी हुई छातियाँ भरी अपनी जोबन में अड़लातियाँ
गले की सफ़ाई वह कुरती की चाक तड़ाके की अँगिया कसी ठीक ठाक
वह कंचन सी उस में कुचें लाल लाल भरे रंग से कुमकुमें के मिसाल।
निसाहट वह भटनी की उससे नमूद कि जों सुर्ख़ चेहरे पै ख़ाले कबूद
कहे तो लिये अपने मुँह पर नक़ाब शफ़क़ में छिपे जों महो आफ़ताब
बनत गिर्द उस के यह क्यों कर फिरै कि जाँ गोखरू लहर खा खा गिरे

वह पाजामये मख़्मले नस्वान और
दुपट्टा बनारस का सूरज के तौर

जवाहिर सजा अपने मौक़े से कुल
तरह शुह्र में हो जैसे नमदीदा गुल।

वह कंघी खिंची और अबरू खिंचे
हर एक आन में अपने हरस्त खिंचे

ख़ज़ूरी वह चोटी ज़री का मुबाफ़।
कि जों दूद के बाद शोला हो साफ़

अरूसान उसने किया जो लिबास
तो आने लगी ख़ून की उस में बास

बनी जब कि इस रंग वह रश्क हूर
चली आई फ़ीरोज़ शह के हुज़ूर

परीज़ाद तो क़त्ल ही हो गया
कहे तू कोई जान से खो गया

हया से न की बात नह कुछ कहा
वले जी से क़ुरबान उस पर रहा

वह बन ठन के आपस में रहने लगे
बहमराज़ दिल अपने कहने लगे

ख़ुशी से हुवे बस कि सरसब्ज़ दिल
लगे सब्ज़ियाँ पीने आपस में मिल

ज़ियाफ़त वह मिल मिल के खाने लगे
वह ग़म खाने उनके ठिकाने लगे

छिपे ऐश इशरत वह करते रहे
पै ग़ैरों के चरचे से डरते रहे।

अगरचे हर एक वस्ल से शाद था
वले हिज्र का ग़म उन्हें याद था

यह ठहरा के निकले वह दो माहरू
कि इस बात को कीजिये एक सू

ग़ज़ब है जो योंहीं दुबारा रहें।
छिपे कब तलक आशकारा रहें

सही है यह तकलीफ़ आराम को
यह नाकामियाँ वरना किस काम को

नसीब इस तरह से जो यारी करें
अयाँ क्यों न हम ख़्वास्तगारी करें।

जब आपस में यह मशविरे हो गये
इधर और उधर मिल के दो दो गये

वह नजमुन्निसा और वह बद्रेमुनीर
कुछ एक कर बहाना वह दोनों शरीर

रहे घर में फिर जाके माँ बाप के
कि देखेंगे हम अब क़दम आपके

निकल बेनज़ीर और फ़ीरोज़ शाह
किसी शहर में रख के फ़ौजो सिपाह

कार असबाब सब सल्तनत का दुरुस्त
फिर आये उसी जा पै चालाक चुस्त

वहाँ का जो था शाहे अंजुम सिपाह
जिसे लोग कहते थे मसऊद शाह।

नामाभेजनाबेनज़ीरकामसऊदशाहकोख़्वास्त-गारी में बद्रेमुनीर के.

कियानामायोंएकउसकोरक़म
किये शाह शाहानेबेफ़ख़्र जम।

फ़रेदूं मिसालो सिकन्दरनेज़ाद
मुरादे जहानो जहाने मुराद।

जहाने शुजाअ़त ज़माने करम
दिले रुस्तमे गुर्द हातिम अमम

मैंवारिद हूं यां एक मेहमां ग़रीब
ले आयेहैं मुझको मेरे यां नसीब।

नवाजिससेअपनेकरमकीजिये
ग़ुलामी में अपने मुझे लीजिये

हमेशा से है राहो रस्में शहां।
कि वा बिस्ता यों ही हैं कारे जहां

जहां परहैरौशन कि मैं माह हूं
मलिकज़ादा इब्ने मलिकशाह हूं

हरयकमुझसेवाक़िफ़हैवरनावपीर
किहै नाम मेरा शहे बेनज़ीर।

बयांसबकियामाज़ियोहालका
तजम्मुललिखाफ़ौजोअमवालका

जिताकरबहुतइज्ज़ओरइनकिसार
लिखायहभीइकहर्फ़आख़िरकीबार

किजोहोवेबरअ़क्सशरएशरीफ़
वहहैअपनेमज़हबमेंअपनाहरीफ़

अगर मानियेख़ैर तो मानिये।
नहीं आप आया हमें जानिये

गयायहजीमसऊदशाहकोपयाम
सुनाओरपढ़ाख़तकामज़मूंतमाम

समझाइसकामज़मूनमसऊदशाह
किइतनीहैफ़ौजओरइतनीसिपाह

अगर जंग हो तो बड़ीजंग हो
फिरआख़िरख़ुदाजानेक्यारंगहो

ओरआख़िरयहीहैज़मानेकाहाल
किपैबन्द होते हैं बाहम निहाल

न ताज़ी यह कुछ रस्म पैबन्द है
हमेशा से आलम बरो मन्द है।

जबाबनामाबेनज़ोरकामलिकमसऊदशाहसे.

लिखानामाउसकोयहयकदस्तजबाब
किआक़िलकोतुह्फ़ालगेहैकिताब

लिखा बाद हम्दो सनाये ख़ुदा । पस अज़ नात अहमद शहे अंबिया
कि नामा तुम्हारा जो सरबस्ता था । वह राज़े निहाँ अपने हाथों खुला
शरीअत के आलम में मजबूर हैं । नहीं अपने नज़दीक हम दूर हैं ।
मगर हम कभी अपने दावे पे आँय । तुम्हारे फ़लक को न ख़ातिर में लाँय
अभी घर से निकले हो लड़कों के तौर । नहीं नेको बद पर तुम्हें अपने ग़ौर
किसी पास दौलत यह रहती नहीं । सदा नाउ काग़ज़ की बहती नहीं
वले क्या करें रस्म दुनिया है यह । वगर ना घमंड आपका क्या है यह
ज़िबस हम को है पास शरए रसूल । सो इस वास्ते करते हैं हम क़बूल ।
ख़िलाफ़े पयम्बर कसे रह गुज़ीद । कि हरगिज़ बमंज़िल न ख़्वाहद रसीद
यक अच्छी सो तारीख़ ठहराइये । दिया हुक्म हम ने तुम्हें आइये
गया एलची लेके नामा उधर । उड़ी हर तरफ़ यह ख़ुशी की ख़बर
सुनी यह जो नामे की गुफ़्तो शुनीद । हुई शाहज़ादे को गोया की ईद ।
कुशादा हुये दिल जो थे ग़म से तंग । उसी दिन से होने लगे रागो रंग ।
हुई घर तरफ़ सब दिल आज़ारियाँ । लगी होने शादी की तय्यारियाँ ।
बुला शगुनयों को बतासा लो सिन । मुक़र्रर किया नेक सायत का दिन

दास्तान बेनज़ीर और बद्रे मुनीर के व्याह की और उस के तजम्मुल में .

किधर है तु ऐ साक़िये गुलबदन । धरे आज उस शमअ रू की लगन ।
बुला मुतरबाने ख़ुश आवाज़ को । कि आवें लिये अपने सब साज़ को
वह असबाब शादी का तय्यार हो । मुक़र्रर न फिर जिसकी तकरार हो ।
बड़ी ख़्वाहिशों से जब आया वो रोज़ । चढ़ा व्याहने वह महे शब फ़रोज़ ।
महल से निकल जब हुवा वह सवार । बजे शादियाने बहम एक बार

करूं उस तजम्मुल का क्यों कर बयाँ कि बाहर है तक़रीर से यह बयाँ।
वह दूलह के उठते ही यक ग़ुल पड़ा लगा देखने उठके छोटा बड़ा।
कोई दौड़ घोड़ों को लाने लगा कोई हाथियों को बिठाने लगा
लगा कहने कोई इधर आइयो अरे रथ शिताबी मेरे लाइयो
किसी ने किसी को पुकारा कहीं न लाने पै म्याने के मारा कहीं
कोई पालकी में चला हो सवार पियादों की रख अपने आगे क़तार
जो कासरत में देखा कि गाड़ी नहीं कोई माँगे ताँगे पै बैठा कहीं।
सिपर और क़ाज़े खड़कने लगे सवारों के घोड़े भड़कने लगे।
टकोरे वह नौबत के औ उनके बाद गरजना वह धौंसों का मानिन्द राद।
वह शहनाइयों की सुहाने धुनें जिन्हें गोश ज़ुहरा मुफ़स्सल सुनें।
हज़ारों तमामी के तख़्ते रवाँ और अहले निशात उनपे जिलवा कुना
वह तबलों का बजना औ उनकी सदा यह गाना कि अच्छा बना लाडला।
वह नौशेक घोड़े पै होना सवार वह मोती का सेहरा जवाहिर निगार
ठिठक कर वह घोड़ों का चलना सँभल हुमा के वह दोनों तरफ़ मोरछल
वह फ़ानूसें आगे ज़मुर्रद निगार कि हो सङ्ग मीना जिन्हों पर निसार
दोरस्ता जो रौशन चिराग़ाँ हुये पतंगे ख़ुशी से ग़ज़ल ख़्वाँ हुये
हुवा दिल जो रौशन चिरागान से पढ़े शेर नूरी के दीवान के।
चिराग़ों के तिरपोलियों जा बजा। और उनमें वह बाज़ारियों की सदा
कोई पान बेचे खिलौने कोई कोई दालमोठ और सलोने कोई
तमाशाइयों का जुदा यक हुजूम। पतंगे गिरें जो चिराग़ों पै झूम
खड़कना वह नौबत का बाजों के साथ गरजना वह धौंसों का डंकों के साथ।
बराती इधर और उधर जूक़ जूक़ वह आवाज़ करना और आवाज़ बूक़
वह काले पियादे और उनके नफ़ीर किता चर्ख़ पहुँची सदा उनकी चीर

वह आरास्ता और गुल कई रंग के
वह हाथी कि दो देव थे जंग के।

वह अबरक़ की टट्टी वह मीने का झाड़
काहे तक कि तिनके के ओझल पहाड़

दोरस्ता बराबर बराबर वह तख़्त
किसी पर कँवल और किसी पर दरख़्त

वह रंगी दरख़्त और वह शमओ चिराग़
खिले जिस तरह लालये नूर बाग़

जहाँ तक नज़र आये उनकी क़तार
तिलिस्मात की सी हवा पर बहार

अनारों का दग़ना भुचंपे का ज़ोर
सितारों का फटना पटाख़ों का शोर

उड़ाया सितारों को जो आग ने
तो हाथी लगे बिन हिले भागने

वह महताब का छूटना बार बार
हर एक रंग की जिससे दूनी बहार

धुवाँ छिप गया नूर में नूर हो।
सियाही उड़ी शब की काफ़ूर हो

सरासर वह हर तर्फ़ मशअ़ल के झाड़
कि जो नूर के सुश्त अ़लहों पहाड़।

ज़री पोश सरदार सब यक दिगर।
फिरैं बर्क़ की तरह ईधर उधर।

कहै तू कि नज़दीक और दूर से
ज़मीनो ज़माँ भर गया नूर से

जब आई वह दुलहिन के घर पर बरात
कहूं वाँ के आलम की क्या तुमसे बात

हुवा वाँ की सुहबत किरश्के बिहश्त
धरे लख़लख़े गिर्द अंबर सरिश्त।

खड़े वाँ तिलो के बख़ीमे बलन्द।
करैं आलमें नूर जिसकी पसन्द

अजब मसनद इक जगमगी और फ़र्श
तमामी के आलम का चौकोर फ़र्श।

बिलौरी धरे शमअ़दाँ बेशुमार
चढ़ी मोम की बत्तियाँ चार चार

नये रंग के और नये तौर के
धरे हर तरफ़ झाड़ बिल्लौर के

तमाशाइयों की यह कसरत के बस
मिले एक से एक सब पेशो पस

दूज़ानू ज़री पोश बैठे तमाम
शराबे ख़ुशी के किये नोश जाम

वह दूलह का मसनद पै जा बैठना
बराबर रफ़ीक़ों का आ बैठना।

तवायफ़ का उठना यक अंदाज़ से
दिखानी वह आ सूरतें नाज़ से

कहूं राग और नाच का क्या बयाँ
क़दीमी किसी वक़्त का सा समाँ

वह अरबाबइशरत का आपुस में मिल ज़माना खड़े राग का देके दिल।
वह समन की तानें इधर और उधर मिले सुर तंबूरों के बा यक दिगर।
और इस सफ़ से इक ओ कड़ी का निकल जेताना हुनर अपना पहले पहल।
उलटना वह ठोकर को देदे के ताल वह बूटा सा क़द और खरबे की बाल
कभी पसमलों की दिखाती अदा कि जों लूट कर बिजली होवे हवा
कभी गत फिरी नाचना ज़ौक़ से कि त्यौरा के आशिक़ गिरे शौक़ से।
इधर की तो यह गत और उस का यह भाउ इधर ओट में नायका का बनाउ
खड़े होके दो घूँट हुक़्क़े के ले। चबा पान और रंग होठों पै दे
अँगूठे की ले सामने आरसी। वह सूरत को देख अपनी गुलज़ार सी।
उलट आस्तीं और मुहरी का चाक नये सिर से अँगिया को कर ठीक ठाक।
बना कंघी और करके अबरू दुरुस्त झटक दामन और होके चाला को चुस्त
दुपट्टे को सिर पर उलट और सँभल। यकायक वह सफ़ चीर आना निकल।
पकड़ कान और घूँघुरू को उठा पहिन पाउँ में अपने सिर से छुवा
इधर और उधर सब के काँधे पै हाथ चली नाचती आना संगत के साथ।
फ़तहचन्द के हाथ की मूर्त्ति एक लजाई हुई चाँद से मूर्त्ति एक।
कभी नाचना और गाना कभी रिझाना कभी और बताना कभी।
ख़ुश आवाज़ियों से वह गाना ख़याल दिखाना हर एक सम में अपना कमाल।
वह शादी की मजलिस वह गाने का रंग वह जी की ख़ुशी और वह दिल की तरंग
वह फूलों के गहने किनारी के हार। वह बैठी हुई रंडियों की क़तार।
वह पेड़ों के पत्ते पड़े हर तरफ़ ग़मे दिल जिसे देख हो बर तरफ़।
इधर का तो यह रंग था और यह राग महल में उधर तोड़ियाँ और सुहाग
वह गहरी सी शादी मुबारक वह ढोल वह टोने सलोने वह मीठे से बोल।
उतरने की वाँ समधिनों की फबन खिलें फूल जैसे चमन दर चमन।

गलेमेंपहिन्नावहहँसहँसकेहार
सदासदवहफ़ूलोंकी छड़ियोंकीमार

दिखानावहबनबनकेअपनाबनाउ
वहआपुसकीरस्मेवहआपुसकीचाउ

कहा केहँसी शोरो गुल तालियाँ
सुहानी सुहानी गई गालियाँ।

ग़रज़ क्या लिखूं ताब मुझमें नहीं
न देखैगा आलम कोई यह कहीं

दास्तान निकाह होना बेनज़ीर का साथ बद्रेमुनीर के और शादी नजमुलनिसा की परीज़ाद से और रुख़सत होना आपुस में.

छका यूँ नशे में बहुत साक़िया
मुझे बदले अबमैके शरबत पिला

किसी पर न ऐसा हो जो बार हूं
कि फिर मैं गले का तेरा हार हूं

हुवा जब निकाह और बटे हारपान
पिला सबको शरबत दिये हारपान

उठा फिर तौ नौशाह बाद अज़ निकाह
महल में बुलाने की ठहरी सलाह

चलायों वह दूलह दुलहिन की तरफ़
उड़े जैसे बुलबुल चमन की तरफ़

वहाँ तक पहुँचते हुये क्या कहूं
हुई दिललगी लाख बहरे शगूं।

हुवा लेकिन उस वक्त दूना मज़ा
कि दूलह दुलहिन जब हुये एकजा

अरूसी वह गहना वह रहहा लिबास
वह मेंहदी सुहानी वह फ़ूलों की बास

मला सुर्ख़ जोड़े पै अतरे सुहाग।
ख़ुले मिलके आपुसमें दोनों के भाग

दिखा मुसहफ़ और आरसी को निकाल
धरा बीचमें सिरपै आँचल को डाल।

न था वस्ल इस तरह का ध्यान में
ख़ुदा ने किया आन की आन में

अजब क़ुदरते हक़ नुमाया हुई
जिसे आरसी देख हैराँ हुई।

वह जिलवे का होना वह शादी की धूम
वह आपसमें दूलह दुलहिन की रसूम

किसी ने पसाई सरोज़ आनकर
कोई गालियाँ दे गई जान कर

सुहागा गई ग्रान की कोई लगा गई कोई दुलह्निन की जूती छुवा
वह शीरीं जो बैठी थी शीरीं बनी न बात उसकी चीनी बने को बनी
चुनाई व नौत उस को इस घात से कि धक्का दिया हर घड़ी बात से
ग़िबस दिल तो था उस का हर जा पै बंद सभी जा से उस ने चुनी कर पसंद
उठाई डली उस की ग्राँखों से यों करें नोश बादाम शीरीं के ज्यों
डली वह जो होंठों की थी लब मिली। वह मिसरी कि मुँह से उठाई डली
कमर से उठाई डली इस तरह कि हाँ हूँ नहीं की नहीं जिस तरह
ज़रा पाउँ पकड़े उठाते ग्रड़ा नहीं ग्रौर हाँ का ग्रजब ग़ुल पड़ा
यह ज़ाहिर की तकरार थी बारबार बग़रना दिल उस पाउँ पर था निसार
ग्रजब तरह की रंगरलियाँ हुईं कि बातें वह मिसरी की डलियाँ हुईं
वह सब हो चुकी जब कि रस्मो रसूम सवारी की होने लगी फिर तो धूम
सहर का वह होना वह टोने का वक़्त वह दुलहन की रुख़्सत वह रोने का वक़्त
खड़े सब का लाचार मुँह देखना क़ियार व यह क्या है जहाँ बैठना
वह दुलहन को रो रो के होना जुदा वह मा बाप का ग्रौर रोना जुदा
निकलते वह जाना महल से दहेज़ कि जों चश्म से ग्रश्क हो मौज ख़ेज़
यहाँ मौत है ग्रहले इरफ़ान को कि जाना है एक दिन योंहीं जान को
वह जो दर्दमन्दी से हैं ग्राशना वह शादी का लेते हैं ग़म से मज़ा
वह दूल्ह ने दुलहन को गोदी में ला बिठाया महाफ़े में ग्राख़िर को ला
चले लेके चंडोल जिस दम कहार किया दो तरफ़ से ज़र उन पर निसार
खड़े थे जो वाँ चश्म को तर किये सो मोती उन्हों ने निछावर किये
इधर ग्रौर उधर ग्रपने सहरे को चीर वह एक चाँद सा मुँह देखा बेनज़ीर
सवार ग्रपने घोड़े पै हो कर शिताब कि जों सुबह हो यै बलँद ग्राफ़ताब
दिखाता हुग्रा हशमतो ग्रहशाम लिये साथ साथ ग्रपने नौबत निशान

वह पीछे तो चंडोल में रश्कमाह
और आगे वह ख़ुरशैद आलमपनाह

फिरा घर को अपने क़दम बाक़ाइम
सवारी लगा घर में उतरा सनम

ग़रज़ इसतरह जबवह दुलहनकोब्याह
ले आया जहाँ उसकी थी ऐशगाह

हुई वह जो होती थी रस्मोरुसूम
कि ज़ाहिर में थी यह भी दरकार धूम

उठाया उसी धूम में लगते हाथ
परीज़ाद का ब्याह चौथी के साथ

वह नज्मुलनिसा थी जो दुख़्ते वज़ीर
गया उसके बाबिद कने बेनज़ीर

कहा बाप को उस के से ख़ैरख़्वाह
मेरा भाई है एक फ़ीरोज़ शाह

सो मैं तुझ से रखता हूं एक इल्तिजा
कि तू उस को फ़रज़न्दी में अपनी ला

ग़रज़ हर तरह कर रज़ामन्द उसे
किया हाल पर अपने पाबन्द उसे

परीज़ाद वह था जो फ़ीरोज़ शाह
दिया उस्को नजमुलनिसा से बियाह

उसी धूम से और उसी फ़ौज से
उसी शान से और उसी औज मे

वही सब तजम्मुल वही सब रुसूम
हुई थी जो कुछ ब्याह में उस के धूम

दक़ीक़ा न छोड़ा किसी बात में
बराबर रही चुहल दिन रात में

उसी तरह उस को बियाहा ग़रज़
जो कुछ कौल था सो निबाहा ग़रज़

ख़ुदा रास्त लाया उन्हों के जो काम
बर आये दिलों के मतालिब तमाम

हुई मुत्तसिल यह जो दो शादियाँ
बसीं एक जा चार आबादियाँ

फिर दिन तो अपने वतन को फिरे
वह आशुफ़ा बुलबुल चमन को फिरे

ख़ुशी से लिये ख़ुरमतो जानो माल
चले शहर को अपने वह हालहाल

वह नज्मुन्निसा और वह फ़ीरोज़ शाह
फ़लक परसे हो मिस्ल ख़ुरशैदो माह

रज़ा उन से ले कर उसी आन में
गये शादो ख़ुर्रम परिस्तान में

यह इक़रार चलते हुये कर गये
कि गो तुम उधर और हम इधर गये

तुम इस ग़म से मत हूजियो सीनारेश
कि हम तुम से मिलते रहेंगे हमेश।

तसल्ली वह दे कर उधर को चले
यह इधर लिये अपना लश्कर चले

दास्तान बेनज़ीर की बद्रेमुनीर को अपने वतन ले जाने और मा बाप से मुलाक़ात करने में.

पिला साक़िया आख़री एक जाम। कि होती है बस अब कहानी तमाम
वह नज़दीक़ पहुँचे जो उस शहर के किये पार जा ख़ीमा एक नहर के
किया जब कि ख़िल्क़त ने तफ़्तीश हाल और आँखों से देखा वो बद्रे कमाल
पड़ा शहर में यक बयक फिर यह गुल, कि गायब हुआ था सो आया वह गुल
ख़बर यह हुई जब कि मा बाप को किया गुम उन्हों ने वहीं आप को
ज़िबस दिल तो था यास ही से भरा यह सुन हाथ और पा गये थरथरा
लगे रोने आपस में ज़ारो नज़ार कहा हाय हम को नहीं एतबार
मिलावेंगे हम से हमारा हबीब यह दुश्मन नहीं अपने ऐसे नसीब
यह होगा कोई दुश्मने मुल्को माल सो मैं आप ही हूं गिरफ़तार हाल
कोई इसका वारिस तो आख़िर नहीं वहीं लेके जावे यह झगड़ा कहीं
कहा सब ने साहब चलो तो सही यह बेटा तुम्हारा वही है वही
मुक़र्रर सुना जब कि बेटे का नाउँ चला फिर तो रोता हुआ नंगे पाउँ
वह आता था जैसे कि बेटा उधर पड़ी बाप पर जो यकायक नज़र
जोंहीं अपने काबे को देखा रवाँ चला सिर के बल बेनज़ीरे जहाँ
गिरा पाउँ पर कह के यह बाप से ख़ुदा ने दिखाये क़दम आप के
सुनी यह सदा जों ही उस माह की तो इस ग़म रसीदा ने इक आह की
उठा सिर क़दम पर से छाती लगा लिपट के घड़ी दो तलक ख़ूब सा
वह रोया यह रोया कि ग़श कर चला कहे तू कि आँसू का लश्कर चला
मिले फिर तो आपस में वह ख़ूब से कि यूसुफ़ मिले जैसे याक़ूब से।
वह गुल २ शिगुफ़्ता हुवा गुल की तरह यह गुल की तरह और वह बुल २ की तरह

तसवीर बेनज़ीर के बाप के क़दम पर गिरने का.

हुये शादो ख़ुर्रम सग़ीरो कबीर — चले लेके नज़रें अमीरो वज़ीर
नये ऐश से सब को मस्ती हुई — नये सिर से आबाद बस्ती हुई
बड़ी धूम से औ बड़ी आन से — बजाते हुये नौबते शान से।
वह फूला जो था हिज्र के दाग़ में — हुये जाके दाख़िल उसी बाग़ में
ज़नानी सवारी उतरवा के साथ — पकड़ उस गुले नौ शिगुफ़्ता का हाथ
दरामद हुआ घर में सर्वे रवाँ — लिये साथ अपने वह ग़ुंचा दहाँ
कि इतने में आगे नज़र जो पड़ी — तो देखा कि है राह में माँ खड़ी
बहे चश्म से आंसुओं की क़तार — गिरा माँ के पावों पै बे इख़्तियार
वह माँ ख़ूब बेटे के लग कर गले — यह रोई कि आँसू के नाले चले।

वह और बेटे को छाती लगा
वह दोनों की दो हाथ से ली बला

हुई जान और जी से उस पर निसार
पिया पानी उन दोनों पर बार बार

ज़िगर पर जो थे दर्द और ग़म के दाग़
बुझे वस्ल से हिज्र के वह चिराग़

सब आपस में रहने लगे मिल मिला
फिर आये चमन में वह गुल खिल खिला

वह आँखें जो अंधी थीं रौशन हुई
ज़मीनें जो थीं रश्क गुलशन हुई

ज़ि बस बाप माँ को थी सेहरे की चाह
दुबारा उन्हों ने किया उस का व्याह

लिखूं मैं गर उस व्याह की धूम धाम
तो फिर यह कहानी न होवे तमाम

बना उन की तक़दीर का जो बनाउ
निकाले उन्हों ने यह सब दिल के चाउ

वह जैसी कि उस बाग़ में थी ख़िज़ाँ
बसे आ के फिर उन में सब गुलरुख़ाँ

महल में अजायब हुये चहचहे
वह मुरझाये गुल फिर हुवे लहलहे

हुआ शहर पर फ़ज़ल परवर्दिगार
वही शाहज़ादी वही शहरयार

वही लोग और वोही पर्चे मुदाम
वही नाज़ो अंदाज़ के अपने काम

वही बुलबुलें और वही बोस्ताँ
शिगुफ़्तो गुलो मजमये दोस्ताँ

उन्हों के जहाँ में फिरे जैसे दिन
हमारे तुम्हारे फिरें वैसे दिन

मिलें सब को बिछुड़े इलाही तमाम
बहक़्क़े मुहम्मद अ़लेहुस्सलाम

हुये जैसे वह शाद हों शाद हम
रहें शहर में अपने आबाद हम

रहे शाद नव्वाब आली जनाब
कि है आसफ़ुद्दौला जिस का खिताब

ख़ुशी उस की है सर्व बाग़े मुराद
रहें रौशन उस का चिराग़े मुराद

बहक़्क़े हुसैनो बहक़्क़े हसन
रहूं शाद में भी ग़ुलामे हसन

ज़रा मुंसिफ़े दाद की है यह जा
कि दरिया सख़ुन का दिया है बहा

ज़ि बस उम्र की इस कहानि में सर्फ़
तब ऐसे यह निकले हैं मोती से हर्फ़

जवानी में जब बन गया हूं मैं पीर
तब ऐसे हुये हैं सख़ुन बेनज़ीर

नहीं मसनवी है यह एक फुलझड़ी
मुसलसल है मोती की गोया लड़ी

नई तर्ज़ है औ नई है जबाँ नहींमसनवीहैयहसहरुल बयाँ
रहेगा जहाँ में मेरा इस से नाम किहै यादगारे जहाँ यह कलाम।
हरएक बात परदिलकोमैंखूँकिया तबइसतरहरंगींयहमज़मूँ किया
अगर वाक़ई ग़ोर टुक कीजिये सिलाइसकाकमहैजोकुछ दीजिये
ग़रज़ जिसनेइसकोसुनाया कहा हसन आफ़रीं मरहबो मरहबा।
जो मुंसिफ़ सुनेंगे कहेंगे यही न ऐसी हुई है न होगी कभी।
मेरेएकमुशफ़िकहैंमिर्ज़ा क़तील किहैं शाह राहे सख़ुन के दलील
सुनीमसनवीजबयहमुझसेतमाम दियाइसकीतारीख़कोइन्तिज़ाम
ज़िबस शेर कहते हैं वह फ़ारसी हरएक शेरउनकाहैज्यों आरसी
उन्होंने शिताबी उठा कर क़लम यह तारीख़ की फ़ारसी में रक़म

तारीख़ तबअ़ज़ाद मिरज़ा क़तील.

चतफ़तीश तारीख़ ई मसनवी कि गुफ़्तशं हसन शायरे देहलवी
ज़े दम ग़ोता दरबहर फ़िक्रे रसा कि आरम बकफ़ गौहरे मुद्दआ
बगोशम ज़िहातिफ़रसीदईनिदा बरींमसनवीबादहरदिल फ़िदा।
११९९

तारीख़ तबअ़ज़ाद मुसहफ़ी.

मियाँमुसहफ़ीकोजोभायायहतौर उन्होंनेभी करफ़िक्र अज़ राहग़ौर
कहीइसकीतारीख़यों बरमहल यह बुतख़ानये चीन है बेबदल
११९९

तारीख़ फ़ख़रुद्दीन माहिर की.

सुनीजब किमाहिरनेयहमसनवी तो मह्ज़ूज़ हो फिक्र तारीख़ की
यह मिसरा पढ़ावोहींपाकरफ़रह हैइसमसनवीकीयहनादिर तरह

इति॥